ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

सितम्बर, 2013

₹10

यो वै भूमा तत्सुखम् नाल्पे सुखमस्ति।

-उपनिषद

गत दिवस जींद में जिला वेद प्रचार मण्डल द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में शांतिधर्मी के सम्पादक चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक की पुस्तक 'भजन-भास्कर' का विमोचन किया गया। विमोचन करते हुए जींद के अतिरिक्त उपायुक्त श्री जयवीर सिंह आर्य, समाजसेवी श्रीचन्द जैन, आचार्य राजेन्द्र जी व स्वामी सोमानन्द जी गुरुकुल कालवा, मा० कपूरसिंह आर्य व प्रो० ओमकुमार आर्य। ज्ञातव्य है कि उक्त पुस्तक का प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से हुआ है।

आर्यसमाज जींद शहर द्वारा श्रावणी पर्व ६ से ११ अगस्त तक मनाया गया। इसमें आचार्य वीरेन्द्र जी सहारनपुर व पं० कुलदीप जी बिजनौर के प्रवचन हुए। अन्तिम दिवस के कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे इण्डस शिक्षण संस्थाओं के निदेशक श्री सुभाष श्योराण सम्बोधित करते हुए व उपस्थित जनसमूह।

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

सितम्बर, २०१३

वर्ष : १५ अंक : ८ भाद्रप्रद २०७०
स ष्टि संवत्-१९६०८५३११४, दयानन्दाब्द : १९०

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५९६-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०९४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१००.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

मेरी आँखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को समझने और बोलने लग जाएँगे। –स्वामी दयानंद सरस्वती

क्या? कहाँ?....

आलेख

हिन्दी दिवस पर इतना तो करें	८
देश शक्तिशाली होकर भी कमजोर क्यों है?	९
हिन्दी के उन्नायक स्वामी दयानन्द सरस्वती	१२
स्कूलों में योग व आध्यात्म की शिक्षा	१४
ईश्वर को न मानें तो क्या हानि है?	१५
उत्तम गृहस्थ में ही जीवन की सफलता	२१
अघमर्षण मंत्र : पापों से बचे रहने के लिए	२३
स्वास्थ्य रक्षा की बीस आवश्यक बातें	२५
धार्मिक अनुष्ठान करने पर भी सुखी क्यों नहीं? (अन्ततः)	३४

कहानी/प्रसंग

रहस्यमयी वीरांगना-१८, चित्तौड़ की महारानी, आज का काम-२७, प्रेरक प्रसंग २८

कविताएँ- १८, २९

स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ६ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ७, बाल वाटिका २६, भजनावली २९

साथ में : समाचार सूचनाएँ, सदा स्वस्थ रहें

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

इत एत उदारुहन् दिवः पृष्ठान्या रुहन्।
प्र भूर्जयो यथा पथो द्यामङ्गिरसो ययुः।।९२

यहाँ भूमि से ऊपर उठकर ये मृत्युंजय वीर-बली।
नाकपृष्ठ[1] का आरोहण कर सुख पाएँ प्रभु का असली।।
सब दुरितों[2] का तर्जन-भर्जन[3] करके द्यौ[4] में पहुंच गए।
अंगों के प्रेरक रस वाले शुभ पथ पाए दिव्य नए।।

१ स्वर्ग लोक, २ बुराईयों का, ३ तोड़-फोड़, ४ द्युलोक में

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

चरित्र का आदर्श

❒चन्द्रभानु आर्य

जिस मानव संस्कृति या भारतीय संस्कृति का हम महिमा मण्डन करते हैं, उसकी अन्यतम विशेषता यह है कि यह मानव के व्यक्तिगत चरित्र निर्माण पर केन्द्रित है। भारतीय संस्कृति को इस मानव संस्कृति की प्रतिनिधि के रूप में इसलिए सम्मान दिया जाता है क्योंकि भारतवर्ष के लोगों ने बहुत बड़े बड़े सांस्कृतिक झंझावातों के बीच में भी अपना सब कुछ देकर भी अपनी इस सांस्कृतिक थाती को बचाकर रखा। तभी तो बहुत काल तक इस देश के लोगों के चरित्र को आदर्श मानकर दुनिया के लोग अपने जीवन को सार्थक बनाते रहे।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।

आदि सम्राट् महाराज मनु का यह स्पष्ट निर्देश पृथिवी के समस्त मानवों के लिए था। इसी परिप्रेक्ष्य में भारत के लोगों ने धन खोया, जन खोया, लेकिन चरित्र नहीं खोया। भारतवर्ष में ही क्या जब भी संसार में कोई विपत्ति आई तो उसके मूल में मनुष्य की अपनी आत्महीनता और चारित्रिक न्यूनताएँ थीं। जब समाज के पथ निर्धारक लोग चारित्रिक दुर्बलताओं का शिकार हो गए तो प्रत्येक क्षेत्र में गरिमा की हानि हुई। चारित्रिक दुर्बलताओं के कारण संभा जी जैसे राजपुत्र शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित दृढ़ आर्य साम्राज्य के विनाश का कारण बन गए और इसी बल के कारण महाराणा प्रताप जैसे नरपुंगव अपने समय के सर्वाधिक शक्तिशाली आक्रमणकारियों को टक्कर दे सके। जब से व्यक्तिगत चरित्र को उपेक्षित किया गया तब से यह देश वह न रहा जिससे विश्व के लोग प्रेरणा ले सकते। स्थिति यहाँ तक पहुंची कि सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य का दावा करने वाले भारतपुत्र सदियों तक गुलाम रहे और आज भी उन दुर्बलताओं और हीनताओं से उभर नहीं सके।

इस संस्कृति में अपनी विवाहिता पत्नी को छोड़कर अन्य स्त्रियों को माता का स्थान दिया गया। **मातृवत् परदारेषु--।** जब शिवाजी महाराज का सेनापति एक शत्रु की पुत्रवधु को पकड़कर लाया तो शिवाजी महाराज का सिर अपने सेनापति के कृत्य पर झुक गया। उन्होंने अपने नादान सेनापति के कृत्य पर क्षमायाचना करते हुए उस नवयौवना को माता कहकर उसके शिविर में वापस लौटा दिया। कारागार में दुर्गादास राठौर के पास जब गुलेनार ने आकर उसे भ्रष्ट करना चाहा तो वीर सेनानी की असली वीरता की परीक्षा हुई, जब उसने मृत्यु की धमकी को सुनकर भी अपने चरित्र की रक्षा की। काशी में जब शास्त्रार्थ में अपराजेय स्वामी दयानन्द को गिराने के लिए एक कन्या को षड्यंत्रपूर्वक भेजा गया तो उसने कहा कि मैं आप जैसा पुत्र चाहती हूँ। इस पर आदित्य ब्रह्मचारी ने कहा कि आप मेरी माता हैं आप मुझे ही अपना पुत्र समझ लीजिए। यही चारित्रिक बल था जिसके कारण सारा विश्व भारत के सामने सर झुकाता रहा। जब पतन हुआ तो इतना हुआ कि विश्व को ब्रह्मचर्य की संजीवनी की शिक्षा देने वाले देश को आज एक विदेशी व्यापारी एड्स जैसी कुख्यात बिमारियों से बचने के तौर तरीके सिखा रहा है। संयम और सदाचार की शिक्षा देने के स्थान अश्लीलता और चरित्रहीनता का प्रचार बढ़ाकर देश के कर्णधारों ने अपने पांवों पर आप कुल्हाड़ी मारी है। पाश्चात्य अपसंस्कृति के जहर ने पीढ़ी को लील लिया है। उसको चरित्र की शिक्षा देने वाला कोई नहीं रहा। आज हमारे फौजियों का उत्साह बढ़ाने के लिए सीमाओं पर नर्तकियाँ और अभिनेत्रियाँ भेजी जाती हैं। नारी स्वतंत्रता के नाम पर चरित्रहीन लोगों ने नारी को मात्र भोग्या बना दिया है। टी० वी० चैनलों की होड़ ने नारी की गरिमा को इतना गिरा दिया कि उसका माता का स्थान तो एक कल्पना की वस्तु बन गया। आज जबकि इस अंधता के परिणाम भी मिलने शुरु हो गये हैं, इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा। आज भी इन भयंकर रोगों से बचने के लिए संयम और सदाचार की शिक्षा नहीं दी जा रही, अपितु दुराचार के नए नए तरीकों का प्रचार किया जा रहा है। चरित्रहीनता के पोषक अभिनेता अभिनेत्रियों को प्रोत्साहित और सम्मानित किया जा रहा है और चरित्र की रक्षा के लिए ब्रह्मचर्य की शिक्षा को आज भी शिक्षा पद्धति में कोई स्थान नहीं है। यदि ब्रह्मचर्य पर आधारित प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनः प्रतिष्ठित किया जावे तो देश की जवानी इन महाभयंकर बिमारियों से बच सकती है। प्राचीन भारतीय संविधान के अनुसार व्यभिचारी स्त्री और पुरुषों को लोहे का पलंग लाल करके मृत्यु दण्ड दिया जाता था, आज उन्हें पद्म भूषण दिये जा रहे हैं। स्वामी दयानन्द कहते हैं कि लड़कियों का विद्यालय लड़कों के विद्यालय से कम से कम दो कोस की दूरी पर हो। लड़कियों के विद्यालय में पांच साल का लड़का भी न जाने पावे और लड़कों के विद्यालय में पांच साल की लड़की भी न जाने पावे। आज देश को बिजली पानी से भी अधिक ब्रह्मचर्य की शिक्षा की आवश्यकता है। इसके अभाव में ही सारी दुर्बलताएँ, रोग और क्लीवता फैल रही है। राम के बेटे पोते आज सब कुछ होते हुए भी दीन हीन अवस्था में जीवन यापन कर रहे हैं। यदि हमें राष्ट्र अभिमान और आत्म गौरव की रक्षा करनी है तो इसका एक ही रास्ता है- ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा।

आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी का जून अंक प्राप्त हुआ। सम्पादकीय भक्ति का उद्देश्य शिक्षाप्रद है। इससे पता चलता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापक है। वह सबके कर्मों के अनुसार फल देता है, कोई पक्षपात नहीं करता। परमात्मा की भक्ति का उद्देश्य तुच्छ सांसारिक प्रलोभनों की प्राप्ति नहीं होना चाहिए बल्कि अपने आत्मा की उन्नति के द्वारा परम सुख मुक्ति प्राप्त करना होना चाहिए। नरेन्द्र आहुजा विवेक का लेख 'जीवन-यात्रा' शिक्षाप्रद है। 'अमृतवचनावली' मन को शांति देती है। यज्ञदत्त आर्य की कहाना 'प्रेम का वास' हमें यह शिक्षा देती है कि जहाँ प्रेम होता है वहाँ धन सम्पत्ति तो स्वयं ही आ जाती हैं। सुमेधा द्वारा प्रस्तुत बाल वाटिका बड़ों व बच्चों के लिए उपयोगी है। अंक की सभी रचनाएँ पाठकों का ज्ञान बढ़ाने वाली और पत्रिका को चार चाँद लगाने वाली हैं।

प्रो० शामलाल कौशल
मकान नं० ९७५ बी/ २०, ग्रीन रोड रोहतक-१२४००१

प्रथम पृष्ठ पर देश गौरव वीर-साहसी महाराणा प्रताप का चित्र देखकर मन आत्मगौरव से प्रफुल्लित हो उठा। शांतिप्रवाह में आपने 'मांस खाओगे तो मरोगे' विषय को बड़े मार्मिक एवं युक्तिसंगत ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। हरियाणा की पावन पवित्र भूमि जो हरि का निवास रहा है। इस प्रदेश में अभक्ष्य पदार्थों का खाना तो दूर जीव जन्तुओं को मारना भी पाप समझा जाता था, उस प्रदेश में रेहड़ियों और खोमचों पर मांस का बिकना कितना विडम्बनापूर्ण कार्य है। पशुओं के योगदान पर पन्नालाल मूंदड़ा का मत माननीय है। मानव के समान पशु पक्षियों को भी जीने का अधिकार प्राप्त है। ईश्वर ने मानव शरीर की रचना शाकाहारी के रूप में की है। आज जो प्राकृतिक प्रकोप हो रहा है वह भी बहुत हद तक उन निरपराध प्राणियों की हत्या से होता है। एक छोटा सा कांटा लगे तो हमें कितना कष्ट अनुभव होता है? तो उन बेजुबान प्राणियों की हत्या से उन्हें कितना कष्ट होता होगा? पत्रिका के सभी लेख उपयोगी और मानव मात्र के कल्याण के लिए अति उत्तम हैं।

प्रकाशचन्द्र अग्रवाल,
मनीष ट्रेडिंग कम्पनी, नेहरू रोड,
पो० सिलीगुडी, जिला दार्जीलिंग (प० बंगाल)

मैं वैदिक संस्थान अहमदाबाद से जुड़ा हूँ। शांतिधर्मी से परिचय भी वहीं से हुआ। राष्ट्रीय और आर्य विचारधारा की रचनाएँ देखकर अच्छा लगा।

सेवाराम गुप्ता 'प्रत्यूष'
सी/६८६, शारदा सदन, अर्बुदानगर
ओढव, अहमदाबाद-३८२४१५

शांतिधर्मी के अगस्त अंक में डॉ० विवेक आर्य का लेख 'धर्म और उसकी आवश्यकता' समसामयिक और प्रेरक है। मनुष्यों के लिए धर्म का पालन ही सदा से सुख का साधन रहा है और सदा रहेगा। धर्म के बिना सुख की कल्पना करना भी बेमानी है। पर आवश्यक यह है कि धर्म के वास्तविक रूप को समझा जाए और उसको जीवन में उतारा जाए। डॉ० विवेक जी ने धर्म एवं मत -मतान्तरों में अन्तर की ओर संकेत कर सार्वभौम धर्म के महत्त्व पर प्रकाश ड़ाला है जो सबके लिए माननीय और आचरणीय है। धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझ पाने के कारण ही साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, और स्वार्थी लोग धर्म के नाम को बदनाम करते हैं।

आर्य नरेन्द्र सोनी,
ग्राम पोस्ट बिठमड़ा जिला हिसार

वैदिक विद्वान् वैज्ञानिक श्रद्धेय डॉ० रामप्रकाश जी को गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का कुलाधिपति बनने पर हमारी ओर से भी हार्दिक साधुवाद! आशा है उनके नेतृत्त्व में विश्वविद्यालय अपनी प्रतिष्ठा और गरिमा को पुनः प्राप्त करेगा। शांतिधर्मी के प्रधान सम्पादक पं० चन्द्रभानु आर्य की पुस्तक 'भजन-भास्कर' को हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा अनुदानित किये जाने पर भी मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

रामप्रताप कटारिया सीनियर ऑडिटर सेवानिवृत्त
ग्रा० पो० पाल्हावास, जिला रेवाड़ी

अगस्त अंक का टाईटल अत्यंत आकर्षक लगा। योगिराज श्रीकृष्ण और धनुर्धर अर्जुन का मनोहारी चित्र देखकर मन विभोर हो गया। इसी से संबंधित 'श्रीकृष्ण का कर्मयोग' लेख बहुत प्रेरक लगा। जैसा कि शांमिप्रवाह में सम्पादक जी ने संकेत किया है, देश में व्याप्त वर्तमान समस्याओं का समाधान श्रीकृष्ण की नीतियों में ही दिखाई देता है।

राहुल आर्य
राजकीय पोलिटैक्नीक, अम्बाला शहर

मधु की मार

❐पं० चमूपति जी

परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा।
मधो अर्षन्ति धारया।।९।।

ऋषिः – असितः = बंधन रहित

(इन्दवः) स्नेहरस से सरसाने वाले (मदाय) मस्ती के लिए (बर्हणा गिरा) महती वेद–वाणी द्वारा (स्वनासः) गीत गाकर (मधो धारया) मधु की धारा के साथ (परि अर्षन्ति) चारों ओर घूमते हैं।

सन्त का घर सारा संसार है। वह जिस भक्ति रस में भीग रहा है, उसका आस्वादन वह सारे संसार को करा देगा। अपनी मीठी वाणी से वह संसार भर में मिठास का संचार करता है। वह मधुमक्षिका है जो स्वयं मधु का उपयोग कर सम्पूर्ण मानव जाति को भी उसका उपभोग कराती है। वह मधु की लहरें बहाती है।

भक्त के हृदय में जब प्रभु की वाणी का स्रोत उमड़ पड़ा, फिर वह चुप कैसे रह सकता है! उसकी नस–नस, नाड़ी–नाड़ी तंत्री सी बन रही है। वह अब विश्व वीणा का तार है। वीणा बज रही है। वह आलाप को कैसे रोके? गाना उसका अनायास स्वभाव है। वह गाता है और चारों दिशाओं में मधुरता का संचार करता है।

उसका चांद सा मुखड़ा जहाँ कहीं भी उदित हो जाता है, दर्शकों के चित चकोर उसके दर्शन मात्र से निहाल हो जाते हैं। उसकी जादू भरी भोली मुस्क्यान, उसकी प्रेमरस से परिपूर्ण निष्कपट दृष्टि सारे मानव समाज के हृदयों में स्नेह रस की चांदनी सी छिटका देती है। उसका एक एक कटाक्ष, सौ उपदेशों का एक उपदेश होता है। उसके आचार में, व्यवहार में, प्रत्येक चेष्टा में गान रहता है। सोमरस के पुतलों के पास सोम के सिवाय और है ही क्या? वे सोमरस ही का पान करते हैं और सोमरस ही का गान!

प्रभो! हम ऐसी मधुमक्षिका कब होंगे? हमारे हृदयों के कटोरों से आप के प्रेम की सुधा कब छलकेगी? हम चन्द्रमा बन कर चांदनी छिटकाएँगे। सम्पूर्ण संसार को वेद के आलोक से आलोकित करेंगे। भगवती श्रुति का यह आशीर्वाद सफल होगा, सफल होगा, अवश्य सफल होगा।

ओह! हमारा वह मंगल रूप! वह मंगल तान! सुधा में संगीत! संगीत में सुधा! निरन्तर गा रहे सुधाकर! स्वानास इन्दवः। ध्यान मात्र से चित्त प्रसन्न हो रहा है।

चाणक्य-नीति

पंचमोऽध्यायः

नः स्पृहो नाऽधिकारी स्यान्नाकामी मण्डन प्रियः।
नाऽविदग्धः प्रियं ब्रूयात् स्फुटवक्ता न वाचकः।।५

गत स्पृह व्यक्ति किसी अधिकार की इच्छा नहीं करता। जो अधिकार चाहता है, उसमें स्पृहा= इच्छा भी होती है। जो व्यक्ति सजावट=फैशन को पसन्द करता है वह कामी न हो यह असम्भव है। जो प्रिय बोलता है वह मूर्ख नहीं हो सकता। और स्पष्ट निष्कपट बात कह देने वाला कभी धोखा नहीं कर सकता।

मूर्खाणां पण्डिता द्वेष्या अधनानां महाधनाः।
वाराङ्गनाः कुलस्त्रीणां सुभगानां च दुर्भगाः।।६।।

मूर्ख व्यक्ति विद्वानों से द्वेष करते ही हैं। धनहीन व्यक्ति धनवानों से द्वेष करते हैं। वेश्याएँ कुलीन स्त्रियों से और दुर्भागी सौभाग्य वालों से द्वेष करते ही हैं।

आलस्योपहता विद्या परहस्तगता स्त्रियः।
अल्पबीजं हतं क्षेत्रं हतं सैन्यमनायकम्।।७।।

आलस्य के कारण विद्या नष्ट हो जाती है। पराए व्यक्ति के पास गई स्त्री अपनी नहीं रहती। कम बीज होने से खेत की उपयोगिता नष्ट हो जाती है और बिना नायक=उचित नेतृत्त्व के सेना नष्ट हो जाती है।

अभ्यासाद्धार्यते विद्या कुलशीलेन धार्यते।
गुणेन ज्ञायते त्वार्यः कोपो नेत्रेण गम्यते।।८।।

विद्या अभ्यास के द्वारा धारण की जाती है। अभ्यास से ही विद्या का समुचित लाभ प्राप्त हो सकता है। शील=सदाचार के द्वारा ही कुल का सम्मान बढ़ता है। कुल को ऊँचा उठाना हो तो आचरण की ओर ध्यान देना चाहिए। गुणों के द्वारा ही आर्यत्त्व जाना जाता है। आंखों से व्यक्ति के क्रोध का ज्ञान हो जाता है।

अमृत वचनावली

प्रीतिशतकम्

❑डॉ० रामभक्त लांगायन
आई ए एस (सेवानिवृत्त)

जीवने परमा प्राप्तिर्या प्राप्तिः परमात्मनः।
तदर्थमात्मपावित्र्यं देहसज्जाऽनपेक्षिता।।७३

मनुष्य का चरम लक्ष्य अर्थात् प्रभु प्राप्ति शरीर की सज्जा से नहीं, अपितु आत्मा की पवित्रता से पूरा हो सकता है।

रूपगर्वान्विताः यान्ति नामरत्वं कदाचन।
इतिहास प्रसिद्धास्ते कुरूपाः सुविवेकिनः।।७४।।

अमर वे नहीं, जो सुन्दर हैं, आकर्षक हैं। अमर वे हैं जिन्होंने असुन्दर और अनाकर्षक होते हुए भी संसार को सुन्दर विचार दिए हैं। और इतिहास में अमर हो गए हैं।

संजाते चित्तनैर्मल्ये सर्वत्र प्रभुदर्शनम्।
पशु पाषाण पुष्पेषु पन्नगेषु पतत्रिषु।।७५।।

जिसका चित्त निर्मल है उसे पशु पक्षियों और पत्थरों में भी परमात्मा नजर आता है। उसके लिए पूरा जीवन परमात्मामय हो जाता है।

जगदालम्बनं यावत् तावन्नेशोऽवलम्ब्यते।
निरालम्बन लोकस्य समुद्धर्त्ता सदेश्वरः।।७६।।

जब तक हम किसी न किसी का सहारा पकड़े रहते हैं तब तक परमात्मा का सहारा उपलब्ध नहीं होता। जिस दिन इन्सान बेसहारा हो जाता है उसी दिन परमात्मा का सहारा उपलब्ध हो जाता है।

उच्चता परिमेयास्ति नाकारेण धनेन वा।
नूनं सा परिमेयाऽस्ति प्रेम्णा लोकस्य सेवया।।७७।।

इन्सान की ऊँचाई उसके कद व पैसे से नहीं मापी जाती, बल्कि उसके सेवाभाव व प्रेम से आंकी जाती है।

हिंदी दिवस पर इतना तो करें

डॉ० वेदप्रताप वैदिक, वरिष्ठ पत्रकार

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस आता है और चला जाता है। सिर्फ सरकारी दफ्तरों में कुछ औपचारिक हलचल होती है। जनता को कुछ पता ही नहीं चलता, जैसे कि हिंदी सिर्फ सरकारी भाषा हो, राष्ट्रभाषा या जनभाषा न हो। सच्चाई तो यह है कि वह सरकारी भाषा भी नहीं है। सरकार की भाषा तो अंग्रेजी है। तो हिंदी-दिवस के दिन देशभक्त और हिंदी भक्त लोगों को क्या करना चाहिए?

हिंदी दिवस के दिन देश के करोड़ों लोगों को संकल्प करना चाहिए कि अपना सारा काम-काज यथासंभव हिंदी में ही करेंगे। कम से कम अपनी निजी काम-काज तो हिंदी में तत्काल शुरु कर दें। कुछ कामों की सूची नीचे दी जा रही है-

1 सबसे पहला काम यह कि अपने हस्ताक्षर हिंदी में करें। आपका बैंक का खाता हो, परिचय-पत्र हो, कोई भी कानूनी दस्तावेज हो, पारपत्र हो, निजी या कानूनी पत्र हो, सर्वत्र आपके हस्ताक्षर हिंदी में होने चाहिएँ। आज के बाद कोई भी कागज ऐसा दिखाई न दे, जिस पर आपने भूल से भी अंग्रेजी में दस्तखत किए हों। आपके हस्ताक्षर आपकी सबसे प्रामाणिक पहचान है। उसे विदेशी भाषा में करके आप यह संदेश क्यों देना चाहते हैं कि मानसिक तौर पर आप अब भी अंग्रेज के गुलाम हैं? आपके पुराने अंग्रेजी हस्ताक्षरों और नए हिंदी हस्ताक्षरों में ताल-मेल बिठाने के लिए वकील से पूछकर आप संक्षिप्त कानूनी कार्रवाई भी कर सकते हैं। यदि आप हिंदी में दस्तखत करेंगे तो आपकी पहचान अपने आप अलग बनेगी। आपके हिंदी हस्ताक्षर आपको प्रति दिन याद दिलाएंगे कि आपकी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के प्रति आपका कर्तव्य क्या है?

आप अपने सभी मित्रों और परिचितों से भी निवेदन करने से न चूकें कि वे अपने हस्ताक्षर हिंदी या अपनी मातृभाषा में करें।

2 अपने दफ्तरों, घरों और दुकानों पर नामपट हिंदी में लगवाएं। अपने मुलाकाती परिचय-पत्र भी स्वभाषा में छपवाएँ। अपने मोहल्ले और बाजार में सभी लोगों से नामपट स्वभाषाओं में लगवाने का अनुरोध करें। कुछ दिन बाद अंग्रेजी के नामपटों को पोतने का अभियान भी चलाया जा सकता है।

3- अपनी कारों, स्कूटरों और वाहनों पर भी अंक और शब्द आदि स्वभाषा में लिखवाएं। अंग्रेजों के कानून को चुनौती दें, उसे तोड़ें और बदलवाएं।

4- अपनी रोजमर्रा की भाषा में अंग्रेजी शब्दों का अनावश्यक प्रयोग नहीं करें। इससे भाषा और विचार, दोनों ही भ्रष्ट हो जाते हैं।

5- अपनी अनौपचारिक बोलचाल, पत्र-व्यवहार, संवाद आदि भी यथासंभव स्वभाषा में ही करें।

6- आपके क्षेत्र के सभी दलों के नेताओं को पता चल जाना चाहिए कि वे विधानसभा या संसद में जाकर अंग्रेजी में बोलेंगे तो उन्हें आपके मत से वंचित होना पड़ेगा।

यदि लाखों-करोड़ों लोग ये संकल्प ले लें तो भारत का हर दिवस हिंदी-दिवस बन जाएगा।

देश शक्तिशाली होकर भी कमजोर क्यों है?

❐प्रो॰ डॉ॰ चन्द्रशेखर लोखण्डे, सीताराम नगर, लातूर (महा॰) ९९२२२५५५९७

अनैतिक आचरण से आत्मबल नष्ट हो जाता है। आत्मबल के लिए नेताओं में नि:स्वार्थ भावना होनी चाहिए। इसी निस्वार्थ भावना से कठोर निर्णय लेने की शक्ति आती है। यह आत्मबल किसी बाजार में नहीं मिलता।

प्रकृति ने भारतवर्ष पर अन्य देशों की तुलना में दिल खोलकर प्राकृतिक सम्पदा लुटाई है। उपजाऊ जमीन, जंगल, ऋतुओं का समतोल, तीनों ओर से समुद्र, खनिज पदार्थ, नदी, पहाड़ इत्यादि हृदय खोल कर इस देश को प्रदान किया है। सांस्कृतिक विचारधारा, वेदों का आदिज्ञान तथा मानव कल्याण की परम्परा सदियों से यहाँ पुष्पित और पल्लवित हो रही है। सही अर्थ में देखा जाय तो हमारा देश प्राकृतिक,भौतिक और सांस्कृतिक संपत्तियों का भण्डार रहा है और आज भी है।

सामाजिक क्षेत्र में यह देश किसी से कम नहीं रहा है। यहाँ के राजा महाराजाओं ने अपने शौर्य और पराक्रम से इस देश पर हुए मध्यपूर्व के आक्रमणों से रक्षा की है। हाँ इतना जरूर है कि सातवीं शताब्दि में हुए मुस्लिम धूर्त आक्रान्ताओं से इस देश को ७०० वर्षों तक गुलामी सहन करनी पड़ी। इसका कारण मध्य पूर्व काल में आयी जड़ता हो सकती है। कुल मिलाकर हमारे योद्धाओं ने अपने शौर्य और पराक्रम से उत्तर-पश्चिम की सीमाओं को विदेशी आक्रान्ताओं से बचाये रखा। उस काल में भी सामाजिक साधनों से हमारा देश परिपूर्ण था और आज भी है। आज हमारे राष्ट्ररक्षा के साधन विपुल और सक्षम हैं। विभिन्न अस्त्रों सहित अणुबम्ब जैसे शत्रुराष्ट्र संहारक हथियार हमारे हाथ मे हैं। आज हम एशिया खण्ड में चीन के पश्चात् सभी देशों में अण्वस्त्र धारी और बलशाली हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी कमजोर हैं यह हमारा मत न होकर पड़ोसी देशों का और यहाँ की जनता का मत है।

यह कमजोरी इस देश की नहीं, यहां की जनता की नहीं, यह कमजोरी नेताओं द्वारा बनायी गयी मानसिक और कृत्रिम है। जैसे कोई दुर्बल व्यक्ति अपने हाथों में अत्याधुनिक शस्त्र लेकर भी उसको चला नहीं सकता, जिसकी मानसिकता सशक्त नहीं है, वह निडर होकर शत्रु पर आक्रमण नहीं कर सकता, कुछ इसी तरह की मानसिकता वाले नेता हमारे देश को कमजोर बनाये हुए हैं। क्या हमारे रक्षामंत्री, विदेश मंत्री और प्रधानमंत्री ने अपनी देहबोली, अपने व्यक्तित्व और वक्तव्य से शत्रुराष्ट्र को कभी सोचने के लिए मजबूर किया है? क्या उनकी वाणी में वह तेज है जिसे सुनकर शत्रुओं के पसीने छूट गये हों? ऐसा कभी नहीं हुआ है। राजनीति में नेताओं का हावभाव और व्यवहार बहुत महत्त्वपूर्ण होता है जो सामने के व्यक्ति पर अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालता है। आधी समस्याएँ तो नेताओं की वाणी से सुलझ जाती हैं। जैसे देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल के वक्तव्य और व्यवहार से सुलझ गयी थीं। ५६५ रियासतों का एक संघ भारत में शामिल करना कोई आसान काम नहीं था, जो उन्होंने बड़ी दृढ़ता के साथ किया। सिर्फ एक कश्मीर का मामला पं॰ जवाहरलाल नेहरू को सौंपा गया था, जिसका परिणाम आप जानते ही हैं।

देश की बागडोर कमजोर हाथों में चली जाय तो देश कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, वह कमजोरी का प्रतीक बनकर रह जाता है। कमजोर सैनिक और कमजोर नेता शत्रुओं पर आक्रमण नहीं कर सकते। शत्रु को उसी की भाषा में जवाब देना होता है जो सेना और सरकार ही दे सकती है। इसलिए देश की बागडोर मजबूत हाथों में हो तो देश सुरक्षित और शक्तिशाली रह सकता है। शत्रु को उसकी भाषा में जवाब देने के लिए मजबूत मानसिकता की जरूरत होती है जो आज कुर्सी में बैठे हुए नेताओं में नहीं है। इच्छा शक्ति का अभाव तो हमारे नेताओं में आजादी के बाद से ही रहा है। सन् १९४७ में पाकिस्तान ने कबीलों को कश्मीर पर आक्रमण करने के लिए भेजा था। हमारे पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू की भीरू वृत्ति के कारण हम सम्पूर्ण कश्मीर वापस नहीं ले सके। उस समय के राजा हरिसिंह ने कश्मीर रियासत को बचाने की गुहार भारत सरकार से लगाई थी लेकिन अपने इमेज की खातिर तथा दुनिया क्या सोचेगी इस अप्रस्तुत भय के कारण पं॰ जवाहरलाल नेहरू ने दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ पाकिस्तान पर आक्रमण नहीं किया और कश्मीर के प्रश्नों को यू एन ओ में ले जाकर भारत के लिए सिरदर्द बनाकर रख दिया। पं॰ नेहरू की इस ढुलमुल नीति से पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच चिर शत्रुत्व का निर्माण हो गया।

युद्ध और अहिंसा के विषय में महात्मा गांधी जी ने कहा था- जो स्वयं का वध होते हुए भी अपने हत्यारे के प्रति क्रोध नहीं करता और ईश्वर से उसे क्षमा करने को कहता है वही सचमुच अहिंसक है। तथा अन्य एक स्थान पर उन्होंने

कहा था कि--''मनुष्य अपने भाई के हाथों (शायद पाकिस्तान) जरूरत पड़ने पर मरने को तैयार रहकर आजादी से जीता है, उसे मारकर नहीं।''

यहाँ गांधीजी को अभिप्रेत है कि व्यक्ति शत्रु के हाथों मरकर भी आजाद हो जाता है। याने जिन्दगी से छुटकारा पा जाता है। क्या यह विचार राष्ट्ररक्षा और विदेश नीति के लिए आत्मघाती नहीं? इस तरह की अकल्पनीय और अनाकलनीय बातें क्या राष्ट्र अथवा समाज को मजबूती दे सकती हैं? और यही शत्रुभय आज के नेताओं के खून में रच बस गया है। ऐसे वक्तव्यों से वह व्यक्ति स्वयं तो महान बन जाता है लेकिन राष्ट्र को कमजोर बना देता है। अनेक नेताओं में यही विचार और संस्कार परम्परा से चले आ रहे हैं। अत: वे बाह्य शत्रुओं और आंतरिक आतंकवादियों के सामने कठोर निर्णय नहीं ले पाते। इसके विपरीत जो राष्ट्रभक्त हैं, इस देश की संस्कृति और परम्परा में विश्वास रखते हैं, उनके मन में इनके प्रति बिल्कुल सहानुभूति नहीं है। इसे ही 'स्वजन उपेक्षा' और 'शत्रुप्रियता' कहा जाता है।

जब सरबजीत सिंह पाकिस्तान की जेल में यातनाएँ भुगत रहा था, तब सरकार उसकी ओर गंभीरता से नहीं देख रही थी। सरबजीत का परिवार भारत सरकार से आक्रोश कर कह रहा था कि सरबजीत निर्दोष है उसे किसी तरह बचा लो। सत्ताधारियों ने परिवार की बात को गंभीरता से नहीं लिया और जब उसे जेल में बडी नृशंसता से मारा गया तब उसे शहीद का दर्जा देने और झूठी सहानुभूति दिखाने की होड़ लगी रही। यह बात सरकार के समझ में आनी चाहिये थी कि कसाब और अफजल गुरु को फांसी दिये जाने के बाद भारतीय कैदियों के साथ धोखा हो सकता है। लेकिन उस तरह की दूरदृष्टि हो तभी ना। यह भारतीय नागरिकों के प्रति उदासीनता और गैरों के प्रति तत्परता का भाव नहीं तो क्या है! इस फांसी काण्ड के बाद सम्बन्धित मन्त्रालयों द्वारा पाकिस्तान के शासकों को चेतावनी देना जरूरी था कि हमारे नागरिकों के साथ कोई ज्यादती न हो और कुछ कम ज्यादा होगा तो इसकी जिम्मेदारी पाकिस्तान की होगी। पर ऐसा कुछ नहीं किया गया और जो होना था वह सरबजीत के साथ हुआ। यह बेफिक्री मिजाज किसी शक्तिशाली देश का लक्षण नहीं हो सकता। अगर यही घटना किसी चीनी नागरिक के साथ हमारे यहाँ हो जाती तो चीन अपने नागरिक के लिए क्या न करता। इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इटली के दो हत्यारों को यह सरकार वापिस नहीं ला सकी, उसको भारत वापिस लाने में न्यायालय की भूमिका अहम रही है। यहाँ पर भी नेताओं की निर्णय क्षमता और निडरता नहीं दिखाई दी।

हमारे देश के नेता देश बचाने से अधिक अपनी सत्ता बचाने को महत्त्व देते हैं, इसलिए देश की सुरक्षा और नागरिकों के हितों को दोयम दर्जा दिया जा रहा है। पहले से खून में आ रही पराकाष्ठा की अहिंसा और उस पर दूरदृष्टि का अभाव; राष्ट्र को दुर्बल बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। सत्ता के लिए पैसा और पैसे के लिए भ्रष्टाचार- यह दुष्टचक्र हमारे नेताओं के जीवन में घुल मिल गया है। अनैतिक आचरण से आत्मबल नष्ट हो जाता है। आत्मबल के लिए नेताओं में नि:स्वार्थ भावना होनी चाहिए। इसी निस्वार्थ भावना से कठोर निर्णय लेने की शक्ति आती है। यह आत्मबल किसी बाजार में नहीं मिलता। गांधीजी के नैतिक आचरण को इन नेताओं ने नहीं लिया, लिया सिर्फ अहिंसा की अतिवादिता को। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि गांधीजी की अहिंसक वृत्ति वैयक्तिक और आध्यात्मिक जीवन के निर्माण के लिए तो उपयोगी है लेकिन राष्ट्र के लिए घातक है। जो व्यक्ति राष्ट्रहित की बजाय स्वार्थहित साधता है वह स्वयं तो नष्ट होता ही है, देश को भी नष्ट कर देता है।

आज का भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह खाये जा रहा है। देश का आर्थिक शोषण इसी भ्रष्टतंत्र के कारण हो रहा है। जनता के खून पसीने की गाढी कमाई को नेता घूस ले देकर सफा चट रहे हैं। टू-जी घोटाला, कोयला घोटाला, खेल घोटाला और रेल घोटाला-- ये देश को रसातल तक पहुंचाने में और आर्थिक दृष्टि से नष्ट-भ्रष्ट करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। भ्रष्टाचार और उसके द्वारा सत्ता हथियाना नेताओं के हथकण्डे बन चुके हैं।

भ्रष्टाचार से नैतिकता और आत्मिक बल नष्ट हो जाता है और ऐसे नेता जब सत्ता के सिंहासन पर बैठते हैं तो देश कमजोर होता है। वे कठोर निर्णय लेने में अकार्यक्षम होते हैं। आजादी की लड़ाई लड़ने वाले नेताओं में जो कार्यक्षमता दिखाई देती थी, वह आज के नेताओं में इसलिए नहीं है कि उनका नैतिक बल गिर चुका है। वे सत्ता सुख के इतने आदि हो चुके हैं कि उनमें संघर्ष करना तो दूर राष्ट्रहित में निर्णय लेने की क्षमता तक नहीं रही।

१५ अगस्त और २६ जनवरी को भारतवर्ष का तिरंगा लहराया जाता है। लाल किले पर प्रधानमंत्री देश के आगामी संकल्प को दोहराते हैं। वहाँ पर भी सामयिक समस्याओं की ही चर्चा की जाती है। होना तो यह चाहिए कि आने वाले समय में हम देश हित में क्या करने में जा रहे हैं, दृढ़ संकल्प को दोहराया जाना चाहिए। हमारे पड़ोसियों के सम्बन्धों पर नीति निर्धारण होना चाहिए। लेकिन वैसा कुछ सुनने को नहीं मिलता। २६ जनवरी को विदेशी मेहमान के सामने शस्त्रास्त्रों का प्रदर्शन करने की एक परम्परा बन चुकी है। हम अपने हथियारों का प्रदर्शन करने में स्वयं को धन्य मानते हैं लेकिन सीमा पर उसके प्रयोग से डरते हैं। मानो यह कह रहे हों- 'ऐ! पड़ोसी देश के रहनुमाओ! देख लो हमारे पास कैसे कैसे खतरनाक हथियार हैं, देख लो!!' हम दिखावा करते हैं,

कभी सीमा पर जाकर मजबूती से क्रियात्मक अभ्यास नहीं करते। ये नेता ये सोचते हैं कि हमारे पास इतने घातक हथियार हैं तो फिर कैसे शत्रु हम पर आक्रमण कर सकता है! लेकिन शत्रु बहुत चालाक है वह अपने प्रदर्शन से नहीं डरता क्योंकि हथियार प्रयोग करने की हिम्मत आप में नहीं, वह यह बखूबी जानता है। जैसे कंजूस आदमी जेब में पैसे रखकर भी खर्च नहीं करता उसी तरह हथियारों से लैस मुल्क उन अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग नहीं कर सकता; क्योंकि उसमें वह आत्मिक बल अथवा कठोर निर्णय लेने की क्षमता नहीं है।

आज इज्राइल का ही उदाहरण ले लीजिए। एक टापू जैसा देश चारों ओर से अरब राष्ट्रों से घिरा- हमास जैसे आतंकवादियों से जिसको खतरा लगातार रहता है, जहाँ उपजाऊ जमीन का नितांत अभाव है, जहाँ कृषि विकास के उतने साधन नहीं है, फिर भी अपनी इच्छाशक्ति और कठोर निर्णयों के कारण शत्रु राष्ट्रों के बीच अडिग होकर खड़ा है। यदि उसके एक नागरिक की हत्या होती है तो उसके बदले शत्रु राष्ट्र के दस नागरिकों को मौत के घाट उतारा जाता है। इसी कठोर नीति के कारण पड़ोस के देश उसके साथ संघर्ष मोल नहीं लेना चाहते। हमारा देश विशाल है फिर भी हम दब्बू बनकर जिये जा रहे हैं।

हमारे नौजवान सीमा पर अपना अतुल शौर्य दिखाते हैं। शत्रुओं को सीमा से खदेडने में अपना सर्वस्व लगा देते हैं, लेकिन दिल्ली में बैठकर नेता उनके पराक्रम की उपेक्षा कर शत्रु राष्ट्र के अनुकूल निर्णय लेते हैं। १९६५ में जब पाकिस्तान ने हमारे देश पर हमला किया था, उसको चीन का भी अभय प्राप्त था। ऐसी विकट परिस्थितियों में हमारे सैनिकों ने पाकिस्तान के लाहौर तक का भूभाग पादाक्रांत कर लिया था। ऐसा लग रहा था कि जिस तरह कश्मीर का बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान ने हथिया लिया है उसी तरह पाकिस्तान का लाहौर तक का बहुत बड़ा भू-भाग भारत अपने अधिकार में कर लेगा। लेकिन ताशकंद समझौते में भारत मैदान की लड़ाई टेबल पर हार गया। यह एक अच्छा मौका था, पाकव्याप्त कश्मीर को वापस लेने का। यदि पाकिस्तान कश्मीर के प्रदेश वापिस देता है तो ही सेना पीछे हटेंगी- इस तरह की शर्त यदि नेता पाक नेताओं के सामने रखते और कठोरता से इस निर्णय पर स्थिर रहते तो उन्हें निरुपाय होकर १९४७ में हथियाये कश्मीर को लौटाना ही पड़ता। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसके विपरीत हमारे सैंकडों सैनिक मारे गये और पाकिस्तान के विजित प्रदेश को भी छोड़ना पड़ा।

कुछ दिन पूर्व मई महीने में चीन के प्रधानमंत्री ली केकि यांग भारत आये। इसके कुछ दिन पूर्व ही चीन सेना ने लद्दाख में १९ किलोमीटर भीतर प्रवेश किया, सेना ने अपने अधिकार में रहकर जितना विरोध करना चाहिए था किया, लेकिन चीन अपनी खुराफातों से बाज नहीं आया। यहाँ भारत को जितना कठोर विरोध दर्शाना चाहिए था, नहीं दिखा पाये। उसके कुछ दिन बाद ही चीन के प्रधानमंत्री देश के दौर पर आये। यह भी उनकी एक नीति थी। जैसे १९६३ में चाऊ एन लाई युद्ध से पूर्व आये थे और यहाँ के नेताओं की देहबोली पढ़कर गये थे और कुछ दिन बाद आक्रमण कर दिया था। उसी प्रकार- चीनी सैनिकों के अतिक्रमण के पश्चात् -भारत के नेताओं पर इसका क्या असर होता है और उनकी क्या प्रतिक्रिया दिखाई देती है- यह परखने के लिए ही चीनी प्रधानमंत्री आये थे। लेकिन सरकार की ओर से जैसी कठोर प्रतिक्रिया दिखाई जानी चाहिए थी, वह दिखाई नहीं गयी। चीन जैसा चालाक और दगाबाज पूरे विश्व में अन्य कोई देश नहीं है। सरकार को उसी की भाषा में जवाब देना चाहिए था, लेकिन दे नहीं पाये। जिस तरह बिल्ली के आगे कबूतर आँख बंद कर लेता है वैसे ही हमारे नेता चीन के आगे सहमकर बैठे जाते हैं यह शक्तिशाली देश को शोभा देने वाली बात नहीं है। उसकी हर हरकत पर पैनी नजर रखी जानी चाहिए वह नहीं रखी जाती। चीन के प्रधानमंत्री ने टेबल पर जो चालाकी करनी थी वह कर दी। आज चीन के कब्जे में भारत की ४५००० वर्ग किलोमीटर भूमि दबी पड़ी है, मानसरोवर और लद्दाख के भूप्रदेश उसी के कब्जे में हैं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने चीनी प्रधानमंत्री के सामने एक बार भी उस सम्बन्ध में बात नहीं उठाई। इसके विपरीत ली केकियांग ने अतिक्रमण की बात को टालते हुए और सीमा विवाद को नजर अंदाज करते हुए तथा ब्रह्मपुत्र नदी और मानसरोवर की यात्रा के समझौते गोलमाल रखकर भारत में निर्यात के सम्बन्ध में प्रस्ताव मनवा लिये। यह तो मैदान और टेबल दोनों पर हारने जैसा हुआ। अगर हम शत्रु पड़ोसियों के साथ इसी तरह पेश आते रहेंगे तो नित नये पड़ोसी शत्रु निर्माण होते रहेंगे इसमें कोई संदेह नहीं है। हम अपनी अत्युदारता और अतिशालीनता के कारण अपने चारों और शत्रु निर्माण कर रहे हैं। जापान चीन के सामने उतना शक्तिशाली न होते हुए भी अपनी दृढ़ता से चीन का सामना कर रहा है। वियतनाम और फिलीपीन्स और दक्षिण कोरिया जैसे छोटे देश चीन को अपनी सीमा में रहने की चेतावनी दे रहे हैं, लेकिन भारतवर्ष इतना विशाल और शक्तिशाली होकर भी परिणाम भय के कारण कमजोर दिखाई दे रहा है।

जो भी हो और जो परिणाम हो भारत के नेताओं को पारम्परिक भयग्रस्तता को छोड़कर जो जैसा है उसके साथ वैसी नीति अपनाते हुए चलना होगा। आप काट नहीं सकते तो कम से कम फुत्कार तो सकते हो। शत्रु को भयग्रस्त तो कर सकते हो। हम इस ''शठेशाठ्यम्'' की नीति के द्वारा ही पड़ोसियों पर अपनी धाक जमा सकते हैं। तब यह देश मानसिक और भौतिक दृष्टि से और शक्तिशाली होगा।

हिन्दी के उन्नायक : स्वामी दयानंद सरस्वती

❑कुमुद शर्मा

भारतीय पुनर्जागरण की अग्रदूत मानी जाने वाली विभूतियों में ही नहीं बल्कि आधुनिक हिंदी निर्माताओं में स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम हमेशा स्मरणीय रहेगा। उन्होंने हिंदी गद्य की शक्ति को बढ़ाकर सच्चे अर्थों में 'राष्ट्र-भाषा के भवन निर्माण' की बुनियाद रखी।

हिंदी की उन्नति और विकास में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान वरदान की तरह हिंदी को मिला। यह सही है कि उन्होंने अन्य हिंदी निर्माताओं की तरह एक सर्जक की भूमिका नहीं निभाई, हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी विपुल मौलिक सृजनात्मक संपदा हिंदी साहित्य को नहीं सौंपी, लेकिन एक सुधारक चिंतक और विचारक की भूमिका में उनके तेजस्वी और निर्भीक व्यक्तित्व ने अपने भाषणों और लेखनी से हिंदी भाषा को अभूतपूर्व शक्ति और सामर्थ्य दी।

हिंदी के विकास के उस क्रम में जब उसका स्वरूप निश्चित नहीं हुआ था, जब वह संस्कृत और उर्दू से दबी हुई थी, उस समय स्वामीजी ने जनता के मानस में गहरे अंत:प्रवेश करने वाली भाषा को ढूँढ निकाला। व्यंग्य.विनोद से युक्त, कहावतों-मुहावरों से संपन्न उपयुक्त भाषा-शैली तलाश कर हिंदी गद्य को उन्होंने सहज, संप्रेषणीय और प्राणवान स्वरूप प्रदान किया। उनकी हिंदी सेवा और उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक व धार्मिक आंदालनों का प्रभाव तत्कालीन हिंदी साहित्य जगत् पर ही नहीं बल्कि उनके निधन के कई वर्षों बाद रचे जाने वाले साहित्य पर भी पड़ा। हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वामीजी के प्रभावकारी हस्तक्षेप को श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' की ये पंक्तियाँ बखूबी निर्धारित करती हैं-

'रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल में हिंदीभाषी क्षेत्र में जो सबसे बड़ी सांस्कृतिक घटना घटी, वह थी स्वामी दयानंद का पवित्रतावादी प्रचार। इस पवित्रतावादी प्रचार से घबराकर द्विवेदीयुगीन कविगण नारी के कामिनी रूप से आँखें चुराने लगे। इस युग के कवियों को शृंगार की कविता लिखते समय यह प्रतीत होता था कि जैसे स्वामी दयानंद पास ही खड़े सब कुछ देख रहे हों। इस भय से छायावादी कवि भी प्रत्यक्ष नारी के बदले 'जूही की कली' अथवा 'विहंगनियों' का आश्रय लेकर अपने भावों का रेचन करने लगे।'

स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म सन 1824 में गुजरात के मोरवी नगर में हुआ था और निधन 30 अक्तूबर, 1883 को अजमेर में हुआ। उनका बाल्यकाल का नाम मूलशंकर था। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पिता से ग्रहण की। पिता से ही संस्कृत का ज्ञान अर्जित किया और संस्कृत का पाठ सीखा। शिवरात्रि के दिन शिव मंदिर में रात्रि जागरण की एक घटना ने बालक मूलशंकर को आंदोलित कर इस सीमा तक मथा कि उसका मन मस्तिष्क चिंतन की नई-नई दिशाओं में कुछ खोजने और पाने को आतुर हो उठा। चिंतन-मनन के कई पड़ावों से गुजरकर वे उन्नीसवीं सदी के स्वामी दयानंद सरस्वती बने तथा चिंतक और विचारक की भूमिका में नवजागरण का संदेश लेकर अपने कर्मक्षेत्र में अवतरित हुए।

गुरु दंडी स्वामी विरजानंद सरस्वती की प्रेरणा से उन्होंने वेदों का प्रचार करते हुए आर्यसमाज की स्थापना की, जिसने राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और सामाजिक जागरण के साथ-साथ हिंदी भाषा और साहित्य को भी संवर्धित किया।

यह कम उल्लेखनीय नहीं है कि स्वामीजी की भाषा गुजराती थी। वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान् थे, लेकिन

उन्होंने हिंदी को जन-जन के लिए उपयुक्त भाषा मानकर उसे 'आर्य-भाषा' की संज्ञा दी। इस 'आर्य भाषा' को राष्ट्रव्यापी बनाने का सपना सँजोया। 'मेरी आँखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को समझने और बोलने लग जाएँगे।' स्वामीजी स्वभाषा, स्वधर्म और स्वसंस्कृति को राष्ट्रीयता का रचनात्मक और भावात्मक आधार मानते थे, इसलिए वे भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक् शिक्षा और सांस्कृतिक भिन्नता तथा व्यवहार का भेद मिटाना चाहते थे। भाषाई एकता के लिए उन्होंने श्री केशवचंद्र सेन की प्रेरणा से हिंदी में ही अपने धार्मिक विचारों और भावों को वाणी दी। हिंदी ही उनके उपदेशों की संवाहिका बनी। हिंदी में ही उन्होंने ग्रंथ लिखे। वाणी और लेखनी के सहयोग से हिंदी का स्वरूप निर्धारण करने में उन्होंने अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

आर्यसमाज की स्थापना के साथ-ही-साथ स्वामी जी ने हिंदी में ही कार्य करना शुरू कर दिया। संस्कृत में पूर्व प्रकाशित ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद हुआ। आर्यसमाज का मूल आधार समझा जाने वाला उनका बहुचर्चित ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' मूल रूप से हिंदी में ही रचित है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय संस्करण की भूमिका में स्वामीजी लिखते हैं-'जिस समय यह ग्रंथ आया उस समय और उससे पूर्व संस्कृत में भाषण करने, पठन-पाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने कारण मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान नहीं था, इससे भाषा अशुद्ध हो गई थी। अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है, इसलिए इस ग्रंथ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है।' यह स्वीकारोक्ति इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने वैदिक धर्म और विचारों के प्रचारार्थ तथा जन-जागरण हेतु हिंदी को अपनाकर हिंदी का मार्ग किस तरह प्रशस्त किया। हिंदी के उद्धार और उन्नति की उन्हें कितनी चिंता थी, इसका ज्वलंत प्रमाण सन 1878 में श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनका लिखा एक पत्र है-'अब की बार भी वेद भाष्य के ऊपर देवनागरी नहीं लिखी गई। जो कहीं ग्राम में अंग्रेजी पढ़ा न होगा तो अंक वहाँ कैसे पहुँचते होंगे और ग्रामों में देवनागरी पढ़े बहुत होते हैं।--- इसलिए अभी इसी पत्र के देखते ही देवनागरी जाननेवाला मुंशी रख लेवें, नहीं तो किसी रजिस्टर के अनुसार ग्राहकों का पता किसी देवनागरी वाले से नागरी में लिखाकर पास किया करें।'

हिंदी के प्रति उनके उत्कट प्रेम और जुड़ाव को व्यक्त करनेवाले अनेक उदाहरण उनके जीवन-चरित्र में घुले-मिले हैं। भारत की करोड़ों-करोड़ जनता यदि अज्ञान और अविद्या के अँधेरे में है तो स्वदेश की भूमि को छोड़कर विदेशों में वैदिक आदर्शों के प्रचार-प्रसार को उन्होंने अनुचित माना और अंग्रेजी सीखकर धर्म प्रचार हेतु विदेश यात्रा का प्रस्ताव भी ठुकराया। अपने ग्रंथों के अनुवाद की अनुमति भी हिंदी प्रेम के कारण नहीं दी- 'जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी वे इस 'आर्य भाषा' को सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे।'

स्वामीजी ने हिंदी साहित्य सृजन की दृष्टि से कविताएँ, कहानी उपन्यास, नाटक भले ही न लिखे हों, लेकिन धर्म-प्रचार और आर्यसमाज के उद्देश्यों, सिद्धान्तों और विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने जिस साहित्य का निर्माण किया, उसने कई अर्थों में हिंदी को बढ़ाया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के अतिरिक्त उनके अन्य ग्रन्थ हैं- अनुभ्रमोच्छेदन, अष्टाध्यायी भाष्य, आत्मचरित, आर्याभिविनय, आर्योद्देश्यरत्नमाला, कुरान-हिंदी, गोकरुणानिधि, पंचमहायज्ञविधि, संध्या भाष्य भाव्यार्थ पोपलीला, प्रतिमापूजन विचार, भ्रमोच्छेदन, ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका, ऋग्वेद-भाष्य (सप्तम् मण्डल तक), यजुर्वेद भाष्य, वेदविरुद्ध मत खंडन, वेदांतिध्वांत निवारण, व्यवहारभानु, शिक्षापत्री ध्वांत निवारण, संस्कार विधि, संस्कृत वाक्य प्रबोध, सत्यासत्य विवेक, वर्णोच्चारण-शिक्षा, संधि विषय, नामिकः, आख्यातिकः पारिभाषिकः आदि आदि।

भारतीय पुनर्जागरण की अग्रदूत मानी जाने वाली विभूतियों में ही नहीं बल्कि आधुनिक हिंदी निर्माताओं में स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम हमेशा स्मरणीय रहेगा। उन्होंने हिंदी गद्य की शक्ति को बढ़ाकर सच्चे अर्थों में 'राष्ट्र-भाषा के भवन निर्माण' की बुनियाद रखी। (अभिव्यक्ति अनुभूति)

स्कूलों में बच्चों को
योग एवं अध्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाये

❒डॉ॰ जगदीश गाँधी, संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

❒वास्तव में बच्चों को केवल योग एवं आध्यात्म की शिक्षा देने से ही संयम, शुचिता, स्व-अनुशासन, नैतिकता, चारित्रिकता तथा आध्यात्मिकता के गुण विकसित होंगे अन्यथा मानव सभ्यता को विनाश के कगार पर जाने से रोका नहीं जा सकेगा।

एक दैनिक समाचार पत्र में 'गोवा में स्कूलों में यौन शिक्षा अनिवार्य बनाए जाने की सिफारिश' शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित किया गया है। इस समाचार के अनुसार गोवा सरकार द्वारा हाल ही में गठित की गई समिति ने स्कूलों में नाबालिगों को दुष्कर्म और यौन उत्पीड़न की घटनाओं से बचाने के लिए सुझाव पेश किए हैं। इसके तहत यौन शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाए जाने की सिफारिश की गई है, जो कि आने वाले समय में देश की बाल एवं युवा पीढ़ी को गलत दिशा में ही ले जाने का ही काम करेगी। हमारा मानना है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अर्पित मनुष्य की ओर से की जाने वाली समस्त सम्भव सेवाओं में से सर्वाधिक महान सेवा है -

(अ) बच्चों की उद्देश्यपूर्ण शिक्षा,
(ब) उनके चरित्र का निर्माण तथा
(स) उनके हृदय में परमात्मा की शिक्षाओं को पर चलने का बचपन से अभ्यास कराना न कि स्कूलों में यौन शिक्षा देकर बच्चों को तन तथा मन का रोगी बनाना।

विदेशों में बढ़ी हैं समस्यायें

अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे देशों से स्कूली बच्चों को यौन शिक्षा देने के परिणाम बुरे आ रहे हैं। इन देशों में अब यह स्पष्ट हो चुका है कि यौन शिक्षा से एच आई वी, एड्स आदि जैसे अनेक रोगों पर तो काबू नहीं पाया जा सका है अपितु इन देशों की बाल एवं युवा पीढ़ी पर इसका उल्टा असर हुआ है। इन देशों में यौन शिक्षा के कारण माता-पिता के जीवित रहते हुए भी लाखों बच्चे अनाथ होकर उन्मुक्त जीवन जीने को विवश हैं, जो कि एड्स जैसे महारोग को बढ़ाने का मुख्य कारण है। इसके अलावा इन देशों में विवाहित जोड़ों में दूसरी स्त्रियों तथा पुरुषों से अवैध संबंध बढ़ाने की प्रवृत्ति जोर पकड़ चुकी है। इन सभ्य कहे जाने वाले पश्चिमी देशों की नकल करने में भारत भी बिना सोचे-विचारे लगा है। उन्मुक्त सेक्स की तरफ बढ़ती प्रवृत्ति के कारण विवाह जैसी पवित्र संस्था का अस्तित्व ही खतरे में पड़ता जा रहा है।

आधुनिकता के नाम पर पांव पसार रही समस्यायें:-

भारत में भी आज कल सभी टी॰वी॰ चैनलों एवं समाचार पत्रों में आधुनिकता के नाम पर युवक-युवतियों द्वारा बिना विवाह के लिव-इन-रिलेशन में साथ रहने के कारण युवतियों के गर्भवती होने व अबार्शन करवाने आदि की घटनायें लगातार सामने आती जा रहीं हैं। इसके बावजूद गोवा की सरकार अपने प्रदेश के विद्यालयों में यौन शिक्षा देने की तैयारी कर रही है। हमारा मानना है कि गोवा सरकार बच्चों की मनःस्थिति का आकलन किये बगैर बाल एवं युवा पीढ़ी को यौन शिक्षा देकर उनके मन-मस्तिष्क एवं चरित्र को पूरी तरह से नष्ट करने की तैयारी कर रही है।

बच्चों को योग एवं आध्यात्म का ज्ञान दें :-

परमात्मा ने मनुष्य और पशु में चार चीजें आहार, निद्रा, भय व मैथुन तो समान रूप से दी है किन्तु उचित-अनुचित व गलत-सही का निर्णय करने की क्षमता केवल मनुष्य को ही दी है। यह क्षमता पशु में नही है। बालक को आध्यात्मिक ज्ञान कराने से उसके मस्तिष्क में ईश्वरीय दिव्य प्रवृत्ति पैदा होती है। यदि उसे आध्यात्मिक ज्ञान न हो तो उसके अंदर पशु प्रवृत्ति बढ़ जाती है और तब मनुष्य उचित-अनुचित व गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाता है और मनुष्य का आचरण पशुवत् हो जाता है। योग और आध्यात्म दोनों ही मनुष्य के तन और मन दोनों को सुन्दर एवं उपयोगी बनाते हैं। योग का अर्थ है- जोड़ना। योग आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है। इसलिए हमारा मानना है कि प्रत्येक बच्चे को बचपन से ही योग एवं आध्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए।

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

दर्शन

ईश्वर को न मानें तो क्या हानि है?

❒**रामफल सिंह आर्य,** ८७/एस-३, बी एस एल कालोनी सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)

हम ईश्वर की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर रहे हैं। उसे हमारी आवश्यकता नहीं है, हमें उसकी आवश्यकता है। यदि हम ईश्वर को न मानेंगे तो जिन गुणों की उपलब्धि उससे हमें होनी है, वह न होगी और हमारा समाज, हमारा जीवन बिगड़ जायेगा।

प्रायः यह सुना जाता है कि अमुक व्यक्ति ईश्वर को नहीं मानता और बहुत सुखी है तथा अमुक ईश्वर को मानता है, वह दुःखी है अतः ईश्वर के मानने का क्या लाभ हुआ? यह शंका अधिकतर लोगों को घेरे रहती है। आइये, इस लेख के माध्यम से हम संक्षिप्त रूप में यह चर्चा करें कि ईश्वर को न मानने से क्या हानियाँ हैं। इससे आस्तिक लोगों को तो जो लाभ होगा सो होगा ही परन्तु एक तर्कपूर्ण विवेचन होने से नास्तिक लोगों को भी उतना ही लाभ होगा। यूं तो ईश्वर के न मानने से अनेकों समस्यायें/हानियाँ उपस्थित होती हैं परन्तु मुख्य रूप से कुछ बिन्दुओं में हमने इनको सम्मिलित करने का प्रयास किया है जिनमें सामान्य रूप से कई बातें आ जाती हैं।

१ कृतघ्नता :- सबसे पहली हानि तो जो ईश्वर के न मानने से होती है वह है कृतघ्नता। ईश्वर हमारे ऊपर अनन्त उपकारों की वर्षा करते हैं। अपनी दया व अनुकम्पा से अनादि काल से हम लोगों का कल्याण ही करते हैं और अनन्त काल तक करते रहेंगे। आश्चर्य इस बात का है कि इसके बदले में वे हमसे लेते कुछ भी नहीं। जबकि संसार में यदि कोई हमारा थोड़ा सा भी कार्य कर देता है या हम पर कोई उपकार करता है तो उसके बदले में हमसे कुछ न कुछ चाहता अवश्य है। मान लो कि कोई ऐसा भी है कि जो बदले में कुछ भी नहीं चाहता तो वह भी हमारा कार्य केवल उस समय तक करता है जब तक कि हमारी विचारधारा का उससे टकराव न हो। जहाँ विचारधारा में भिन्नता आई, उसे हमारा शत्रु बनने में भी देर नहीं लगती। परन्तु ईश्वर का उपकार इस कोटि का नहीं है। चाहे हम आस्तिक हों या नास्तिक, वह कभी हमारा न तो शत्रु बनता न अपने उपकारों का कोई बदला चाहता और न ही उन्हें करना बन्द करता है। हमारी सब आवश्यकतायें उसी की सहायता से पूर्ण होती हैं। उसकी सहायता के बिना हम एक पग भी नहीं उठा सकते फिर भी यदि उसके उपकारों को या उसे न मानें तो कृतघ्नता का महा-पाप हमें लगता है। शास्त्रकारों ने जहाँ अन्य पापों का प्रायश्चित माना है, वहीं कृतघ्नता को ऐसा पाप माना है कि जिसका कोई प्रायश्चित भी नहीं है। कृतज्ञ होना मनुष्यों का महान् गुण है और कृतघ्न होना महान् दोष या पाप। विचार कीजिए कि यदि ईश्वर हमें शरीर देता और उसकी आवश्यकता की पूर्ति हेतु अन्य साधन न देता तो हमारी क्या दशा होती? हम उसका क्या बिगाड़ लेते? परन्तु आश्चर्य है कि यूं तो हमारा कोई छोटा सा भी कार्य कर देता है तो हम उसका गुणगान करते फिरते हैं और जो नित्य निरंतर हम पर अनन्त कृपायें बरसाता रहता है, बिन मांगे सब कुछ देता जाता है, उसे जानते तक नहीं, अपितु सदैव उसकी अवहेलना ही करते जाते हैं। क्या इस दोष का कोई मूल्यांकन कर सकेगा। भगवान को न मानने से जो पाप हमें लगा उसका भला हम कोई सुधार कर पायेंगे? क्या यह मनुष्यता है?

किसी भी पदार्थ का निर्माण न हो पाना- मान लीजिये कि कोई ऐसा नीरस, शुष्क एवं केवल भौतिकवादी बुद्धिजीवी है कि जो न तो भगवान को मानता है और न ही कृतज्ञता को मानता है। यह संसार को केवल एक लेन-देन की मण्डी मानता है। यह मानता है कि बिना लिये दिये यहां का कार्य नहीं चलता। मात्र लेन-देन ही संसार का आधार है। ठीक है, कोई कुछ भी मानने में स्वतंत्र है जिसका जैसा जी चाहे मानें। परन्तु विज्ञान को तो मानना ही पड़ेगा। चाहे आस्तिक हो या नास्तिक- दोनों ही इसे स्वीकार करते हैं। अपितु नास्तिक इसे अधिक स्वीकार करता है। वह यह मानता है कि संसार का निर्माण परमाणुओं के मिलने से हुआ है। परमाणुणों के मिलन का नाम रचना है और बिखरन का नाम विनाश है। सब ग्रह-उपग्रह परस्पर आकर्षण में बंधे हुए नियम से कार्य कर रहे हैं। 'बिग बैंग' से परमाणुओं में गति उत्पन्न हुई और उनके मेल से धीरे-२ पदार्थों का निर्माण होता चला गया। ठीक है! हम थोड़ी देर के लिए उनके इस विचार से सहमति रखते हैं। परन्तु विज्ञान को विज्ञान की ही दृष्टि से देखना चाहिए, मूर्खता की दृष्टि

से नहीं। ऐसा नहीं है कि विज्ञान में सब कार्य चमत्कारी ढंग से पूर्ण होते हैं। स्मरण रखिये कि विज्ञान में एक क्रमबद्धता (order) होती है और सब कार्य एक निश्चित क्रम में एक नियम के अनुसार हुआ करते हैं। यदि रत्ती भर भी उस नियम का भंग होगा तो कार्य कभी सम्पन्न नहीं हो सकेगा। संसार के सभी भौतिकवादी इसे एक मत से स्वीकार करते हैं। विज्ञान के जितने भी कार्य आपको दिखाई देते हैं वे सभी इसी नियमबद्धता पर आधारित हैं। अब विचार करना चाहिये कि क्या नियम कभी बिना नियामक के बन सकता है? क्या नियम स्वयं बन जाते हैं? सड़क पर बाईं ओर लोग अपने आप चलने लग गये या किसी ने ऐसा करने के लिए कहा? बाजार में अधिक वाहनों आदि के होने से भीड़ होने पर लाल बत्ती होने पर रुकने एवं हरी होने पर चलने का नियम स्वयं बन गया था या किसी ने बनाया? नियम कभी भी बिना नियामक के नहीं बनता। जितना उत्तम नियामक होगा, नियम भी उतना ही श्रेष्ठ एवं उत्तम होगा। उत्तम नियामक की यह विशेषता है कि वह कहीं भी, कुछ भी अपने नियमों को नहीं बदलता, चाहे इसके लिए उसे कितनी भी कठिनाई का सामना क्यों न करना पड़े। इसलिए यदि आप विज्ञानवादी हैं और यह मानते हैं कि नियम बनाने वाला कोई नहीं तो इस बात को अपने मन से निकाल दीजिये कि नियम स्वयं बनते हैं। अरे! जब सड़क पर चलने का साधारण सा नियम भी स्वयं नहीं बनता तो पदार्थों के निर्माण में नियमबद्धता क्या कभी बिना नियामक के हो सकती है?

दर्शन एवं विज्ञान दोनों इस बात को स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। वैशेषिक दर्शन का ऋषि कहता है- 'कारण अभावात् कार्य अभावः।' अर्थात् कारण नहीं होगा तो कार्य नहीं होगा। यह एक सर्वतन्त्र सिद्धांत है। Universal Truth है, जो कहीं भी, कभी भी, कुछ भी नहीं बदलता। जैसे पृथ्वी घूमती है इसे सब स्वीकार करते हैं। वैसे यह भी सिद्धांत है कि बिना कारण के कार्य नहीं होता। अब कारण कितने हैं? भारतीय वैज्ञानिकों, अपितु वैदिक विद्वानों ने इसे तीन भागों में विभक्त किया है। उपादान कारण वह कि जिससे वस्तु बनती है। जैसे कि घड़ा-मिट्टी से, मेज-लकडी से और तलवार लोहे से बनती है। जब तक मिट्टी, लकडी एवं लोहा नहीं होगा तब तक घड़ा, मेज व तलवार नहीं बन सकते। दूसरा है साधारण कारण। वह कि बनाने के साधन- घड़ा बनाने के लिये चाक, दण्ड, पानी एवं समय की, मेज बनाने के लिए कुल्हाड़ी, रन्दा, कीलें आदि की और तलवार बनाने के लिए भट्ठी, हथौड़ा, अग्नि आदि की आवश्यकता है। समय तो सामूहिक रूप से सबमें लगता ही है। अब मिट्टी है, चाक है, दण्ड है, पानी है और कुल्हाडी रन्दा, कीलें, भट्ठी हथौडा, अग्नि आदि सभी कुछ है परन्तु बनाने वाला कुम्हार, बढ़ई और लौहार नहीं है तो क्या ये सब वस्तुएँ अपने आप बन जायेंगी? कदापि नहीं, यही तीसरा कारण कारण निमित्त कारण कहलाता है। ये वे तीन परम आवश्यक साधन हैं, जिनके बिना कभी कोई पदार्थ या रचना संभव ही नहीं है। अतः इस स्थिति में नास्तिक लोगों का यह कहना ठीक नहीं है कि संसार मात्र परमाणुओं के मेल से स्वयं बन गया। नहीं-नहीं, उपादान कारण- प्रकृति, साधारण कारण-समय आदि और निमित्त कारण- स्वयं ईश्वर के बिना सृष्टि रचना की कल्पना ही व्यर्थ है। यहाँ एक शंका यह हो सकती है कि जैसे कुम्हार को घड़ा बनाने के लिए चाक, दण्ड पानी आदि की आवश्यकता है तो क्या ईश्वर को भी इस प्रकार के बाहरी साधनों की आवश्यकता थी? जी नहीं! ईश्वर का कार्य बाहरी रूप से पदार्थों का निर्माण करने का नहीं है। बाहरी साधनों की आवश्यकता अल्प शक्ति वालों एवं स्थूल शरीर वालों को रहती है। सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ एवं परम सूक्ष्म ईश्वर को नहीं। वह तो परमाणुओं के भीतर भी व्यापक है और बाहर भी, अतः उसे कार्य करने के लिए बाहरी साधनों की आवश्यकता ही नहीं है। वह अन्दर से अपना कार्य करता है। स्मरण रखिये ईश्वर का कार्य घड़ा, मेज या तलवार बनाना नहीं है अपितु मिट्टी, लकड़ी या लोहा (वह भी सूक्ष्म अवस्था में) बनाना है, जो मनुष्य नहीं बना सकता।

अब यदि आप ईश्वर को नहीं मानते तो विज्ञान का सारा दुर्ग एक फूंक में उड़ जायेगा। अतः यह कहना कि परमाणुओं में गति आने से सब पदार्थों का निर्माण स्वतः ही हो गया, मूर्खता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। वेद मंत्र स्वयं कहता है- हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। संसार की उत्पत्ति से पूर्व प्रकृति भी थी और उसको गति देने वाला उसका स्वामी ईश्वर भी था। अतः यदि ईश्वर को न मानें तो यह महान् समस्या उत्पन्न हो जायेगी कि कोई भी पदार्थ बन नहीं सकेगा।

ज्ञान का अभाव- तीसरी महान् हानि होगी- प्राणियों में और विशेष रूप से मनुष्यों में ज्ञान का अभाव होगा। ज्ञान दो प्रकार का है- एक स्वाभाविक, दूसरा नैमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान- जो पशुओं आदि में है, इसमें कोई बहुत अधिक परिवर्धन नहीं किया जा सकता। हां! सामान्य रूप से उसका उपयोग हम अपने अनुसार करने योग्य उन्हें मोड़ दे लेते हैं। परन्तु मनुष्यों का ज्ञान इससे भिन्न है। यह बढ़ाने से बढ़ जाता है और घटाने से घट जाता है। यदि सृष्टि के आरंभ में,

ईश्वर का सच्चा भक्त ईश्वरीय व्यवस्था को जानकर कभी दुःख में भी धैर्य नहीं छोड़ता न उसका शोक मनाता है अपितु हंसते–२ सब कुछ सहन कर लेता है और दूसरी ओर नास्तिक जो भौतिक सुख साधनों से सम्पन्न होने पर भी तनिक सी आपत्ति में भी धैर्य खोकर महान् कष्ट उठाता है और आत्महत्या का घृणित कार्य भी कर डालता है।

ईश्वर मनुष्य को ज्ञान (वेद) न देता तो यह कभी भी ज्ञानवान नहीं बन सकता था। जो लोग (विशेष रूप से विकासवादी) यह कहते हैं कि मनुष्य में ज्ञान का उदय धीरे–२ हुआ, आरंभ में वह निरा जंगली ही था, अपितु पशु ही था, वे बहुत बड़ी भूल में पड़े हैं। उदाहरण के रूप में हमने अपने शिक्षकों से, गुरुओं से शिक्षा पाई, उन्होंने अपने गुरुओं से और उन्होंने अपने गुरुओं से। यह क्रम पीछे की और चलते–२ एक ऐसी अवस्था में चला जाता है जहाँ पर शिक्षा देने वाला कोई भी गुरु नहीं बचता। उस समस्या का समाधान संसार का महानतम आस्तिक ऋषि, पंतजलि करता है। वह कहता है

सः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् (योग १/२६)

वह गुरुओं का भी गुरु है, जिसको काल भी बाधित नहीं कर सकता। विकासवादी कहता है कि मनुष्य का विकास बन्दर से हुआ और धीरे–२ उसके ज्ञान में वृद्धि हुई। प्रथम तो इस विचार में ही अनेकों भ्रांतियाँ हैं, फिर भी यदि यह मान लिया जाये कि मनुष्य का विकास बन्दरों से हुआ तो फिर ज्ञान का उदय होना, वह भी उतनी उच्च कोटि का यह नितांत असंभव है। बाहर की परिस्थितियां चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, उससे केवल इतना तो प्रभाव पड़ सकता है कि उससे प्राणियों का बाह्य रंग रूप कुछ बदल जाये या उनका खान पान बदल जाये परन्तु यह संभव नहीं है कि उनमें आमूल चूल परिवर्तन इस सीमा तक हो जाये कि जिससे उनकी समूची जाति ही बदल जाये और वह अपना विकास इस सीमा तक कर ले कि ज्ञान का उदय उसे धरा से गगन तक बढ़ा दे। बन्दरों का स्वभाव तो क्रूर, लड़ने–झगड़ने एवं छीना–झपटी का है। मनुष्य में यह संवेदना, एक दूसरे से सहयोग की भावना कहाँ से आ गई? ज्ञान भी ईश्वर प्रदत्त है। यदि ईश्वर को न मानें तो फिर आदि में ज्ञान का अभाव होने से मनुष्य अज्ञानी ही रहेगा।

कर्मफल व्यवस्था का भंग होना : एक महान् समस्या और भी है वह है कर्मों का उचित फल न मिलने से अन्याय का होना। हम जो भी कर्म करते हैं उनका अच्छा या बुरा फल कर्मानुसार अवश्य मिलता है। यह एक अटल व्यवस्था है जिसके सहारे संसार चलता है और न्याय व्यवस्था जीवित रहती है। मनुष्यों ने भी समाज को ठीक से चलाने के लिए, लोगों की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिये दण्ड व्यवस्था या न्याय व्यवस्था का निर्माण किया। यदि व्यक्ति को उसके कर्मों का फल ठीक से न मिले तो निरा जंगली हो जायेगा। उस दशा में समाज में इतनी भयानक स्थिति उत्पन्न हो जायेगी कि हम एक दिन भी न तो सुख से जीवित रह पायेंगे और न ही किसी प्रकार की उन्नति ही संभव हो पायेगी। कारण! कि जब बुरे कर्म का फल दुःख रूप में, दण्ड रूप में नही मिलेगा तो कोई अच्छा कर्म करेगा ही क्यों? इसलिए जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में परतन्त्र। अर्थात् फल वह ईश्वरीय व्यवस्था से पाता है। कोई अपने बुरे कर्म का फल दुःख या दण्ड स्वयं ही क्यों भोगना चाहेगा?

दयालुता का अभाव एवं हिंसा की वृद्धि : अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य में कुछ विशेष ईश्वर ने दिया है। वह है दूसरे प्राणियों के प्रति दया का भाव। यह भी ईश्वर प्रदत्त है। अन्य प्राणी दया करना नहीं जानते, वे तो अपना पेट भरने के लिए दूसरों को मार कर खा जाते हैं। परन्तु मनुष्य में कुछ विशेष भाव ईश्वर ने संभवतः इसलिये भरा है कि मनुष्य सारे संसार का स्वामी भी है और श्रेष्ठ भी है। स्वामी का स्वामित्व और श्रेष्ठ की श्रेष्ठता इसी में है कि वह दूसरों पर दया करे। यदि दया का भाव न होगा तो फिर हिंसा की वृद्धि होकर सब एक दूसरे के शत्रु बन के लड़ मरेंगे। यह संवेदना, यह दया बिना ईश्वर के संभव नहीं है। अपने पैर में कांटा चुभने पर पीड़ा की अनुभूति होना ज्ञान है, परन्तु दूसरे के पैर में पीड़ा होने पर उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ना– यह ज्ञान का नहीं, संवदेना का– दया का कार्य है। मनुष्यों में जिस दिन यह भाव समाप्त हो जायेगा उस दिन मनुष्य जाति भी समाप्त हो जायेगी। अतः ईश्वर को न मानने से यह दोष भी उत्पन्न हो जायेगा।

सृष्टि का संचालन न हो पाना : ईश्वर सृष्टि को उत्पन्न ही नहीं करता अपितु वह उसका ठीक ढंग से संचालन भी करता है। स्मरण रखना चाहिए कि जब हम सृष्टि की बात करते हैं तो उसमें यह सब कुछ आ जाता है, जो हमें दिखाई देता है और नहीं दिखाई देता है। मनुष्य, पशु, पक्षी, जंगल, नदियां, पहाड़, ग्रह, उपग्रह, वायु, जल, अग्नि आदि समस्त वस्तुएँ। आज हम यह जान चुके हैं कि सब ग्रह–उपग्रह गुरुत्वाकर्षण की शक्ति में बंधे अपनी–२ धुरी पर घूम रहे हैं। कोई भी किसी से टकराता नहीं है। पृथ्वी को ही ले लीजिये। कितनी भारी, कितनी विशाल है यह। इस पर

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

हसीना बेगम
रहस्यमयी वीरांगना

❒अलका अनु

कश्मीर का नैसर्गिक सौंदर्य हसीना के नूरे–सौंदर्य के सामने धुंधला जाता। झूमते देवदारों के स्वर, झरनों से गिरते पानी का कल–कल और हिम से भरे पर्वतों का सुरमई रंग हसीना की स्वर लहरी में खामोश हो उठता और जब उसके पैरों के घुंघरू उसके नृत्य पर मादक रंग बिखेरते तो आंखें उस नृत्य मूर्ति पर अपनी पलकें रोके ठहर जातीं।

ऐसी हसीन युवती की कहानी, जो सौंदर्यमयी होने के साथ–साथ नृत्य, संगीत और गायिकी की भी बेमिसाल शख्सियत थी। इसके दिल में देश प्रेम का ऐसा जज्बा था कि उसने अपनी बलि देकर अपनी मातृभूमि की रक्षा की। हसीना बेगम की कहानी की भूमिका बनी थी १४ अगस्त, १९४७ की रात को भारत के विभाजन से। निर्णय लेने की अन्ति तिथि बीत गई लेकिन महाराजा हरिसिंह असमंजस में ही पड़े रहे। पाकिस्तान ने अक्तूबर, १९४७ में उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत से सशस्त्र कबाइलियों के झुंड भेजकर कश्मीर रियासत पर कब्जा करने का मंसूबा बनाया। पाकिस्तान ने अनुमान लगाया कि एक बार श्रीनगर पर कब्जा हो जाए तो समूची कश्मीर घाटी अपने आप उसके अधिकार में हो जाएगी। इस सैनिक कार्रवाई का गुप्त नाम 'ऑपरेशन गुलमर्ग' रखा गया और पाकिस्तान सेना के मेजर जनरल अकबर खां इसके सेनापति बनाए गए।

२२ अक्तूबर, १९४७ को लगभग ५ हजार कबाइली कश्मीर में घुस पड़े। इनमें अफरीदी, वजीर, महमूद और स्वार्थी कबीलों के लोगों के साथ ही पाकिस्तानी सेना के ऐसे सैनिक थे, जो क्रूरता करने में हद से पार हो जाते थे। इस ऑपरेशन के लिए इन्हें खूब प्रोत्साहित किया गया और उन्हें खुली छूट दी गई कि वे इस अभियान में नरसंहार के साथ ही लूटपाट और औरतों से बलात्कार भी चाहें, कर सकते हैं। उनका नेतृत्व पाकिस्तानी सेना के वे सैनिक कर रहे थे, जिन्हें कश्मीर की ताजा और प्रामाणिक जानकारियां थीं। पहले उन्होंने गढ़ी और डोमेल नामक कस्बों पर हमला किया और वहाँ उन्होंने हर घर में आतंक मचा दिया। लूटपाट के साथ ही उन्होंने औरतों को भी नहीं छोड़ा और मासूम बच्चों तक की हत्या कर दी। इसके बाद वे मुजफ्फराबाद की ओर बढ़ चले।

मुजफ्फराबाद में कबाइलियों के लिए कोई खास समस्या पैदा नहीं हुई क्योंकि लेफ्टिनेंट कर्नल नारायण सिंह की कमान में रियासत की सेना का प्रतिरोध काफी क्षीण था। यहां भी कबाइलियों ने लूटमार और महिलाओं के साथ बलात्कार की हरकतें जारी रखीं। अपने इस जोश में वे भूल ही गए थे कि रात होने तक उन्हें उरी क्षेत्र को पार करते हुए बारामूला पहुंच जाना था। चूंकि अंधेरा हो चुका था, इसलिए उन्होंने मुजफ्फराबाद में ही पड़ाव डालने और अगली सुबह अपनी यात्रा पुनः शुरू करने का निश्चय किया।

इस समय तक कबाइलियों के हमले की खबर श्रीनगर पहुंच चुकी थी। यह सूचना पाकर कि कबाइली रात में मुजफ्फराबाद में पड़ाव डाले हुए थे, कश्मीर रियासत की सेनाओं की चीफ ऑफ स्टाफ ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह ने उरी पहुंचकर कबाइलियों से निबटने का फैसला किया। अपने २०० सर्वोत्तम सैनिकों को इकट्ठा कर वे उरी के लिए तत्काल रवाना हो गए। उरी श्रीनगर से ६२ मील की दूरी पर है।

यह २३ अक्तूबर की सुबह की घटना है। उस समय तक कोई नहीं जातना था कि ब्रिगेडियर ने किस ख्याल से यह कदम उठाया था, क्योंकि इन २०० सैनिकों के बल पर कबाइलियों की विशाल सेना से निपटना

मर जाऊँगा तब भी
तुम से दूर नहीं मैं हो पाऊँगा
मेरे देश, तुम्हारी छाती की मिट्टी में
मैं सो जाऊँगा
मिट्टी की नाभि से निकला मैं
ब्रह्मा होकर आऊँगा
गेहूं की मुट्ठी बांधे
मैं खेतों–खेतों में छा जाऊँगा

–स्व० केदारनाथ अग्रवाल

लगभग असंभव था। हो सकता है, उनका उद्देश्य कबाइलियों के पड़ाव को उरी में रोके रखकर उन्हें देर करवाना रहा हो, ताकि श्रीनगर के उच्चाधिकारियों को स्थिति से निबटने के लिए उचित कार्रवाई करने का समय मिल सके।

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह अपने सैनिकों के साथ सुबह में उरी पहुंचे और कबाइलियों से जमकर लोहा लिया किन्तु इसमें उनके अधिकतर सैनिक वीर गति को प्राप्त हुए और स्वयं ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह भी शहीद हो गए। इस वीरता के लिए मरणोपरांत महावीर चक्र का पुरस्कार उन्हें मिला।

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह के दल का सार्जेंट घायल होकर किसी प्रकार रात में बारामूला पहुंचा। अपने भागने के दौरान उसे पाकिस्तानी उच्चाधिकारियों, कबाइलियों व भारत सरकार की सैन्य संबंधित जानकारियां मिली थीं और वह चाहता था कि पाकिस्तानी उच्चाधिकारियों व कबाइलियों के मध्य षड्यंत्र की जो योजना बनी है, उसे वह भारत सरकार के उच्चाधिकारियों तक किसी भी तरह पहुंचा दे। वह छिपता-छुपाता हसीना बेगम की कोठी पहुंच गया। हसीना अपनी मां के साथ रहती थी। उसके घर में तीन-चार नौकर-नौकरानियां थे। सार्जेंट जब वहाँ पहुंचा तो वह बेहोश हो गया था। थोड़े से इलाज के बाद ही जब उसे होश आया तो उसने अपनी परेशानी बताई। उसकी बात सुनकर तो सभी को सांप सूंघ गया लेकिन हसीना ने कहा, "चचाजान, आप बेफिक्र रहें। कबाइलियों को श्रीनगर जाने से मैं रोकूंगी और उन्हें तब तक रोके रखूंगी जब तक हमारी फौज नहीं आ जाती----"

"मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद है, बेटी---", वह आगे नहीं बोल पाए क्योंकि उनकी सांसें उखड़ चुकी थीं। हसीना ने अपने दो विश्वासी कारिंदों को अच्छी तरह समझा कर श्रीनगर भेजा।

आगे की घटना का वर्णन करने के पहले यह बताना आवश्यक है कि भारत सरकार और कश्मीर रियासत के विलय व पाकिस्तान द्वारा ऐसे षंड्यंत्र पर भारत सरकार ने क्या निर्णय लिया।

लंबे समय तक चले विचार-विमर्श के बाद भारत संघ में जम्मू और कश्मीर रियासत के विलय को स्वीकार कर लिया गया और फौरन आदेश दिए गए कि अगली सुबह ही सेना की एक बटालियन श्रीनगर भेजी जाए ताकि श्रीनगर की रक्षा की जा सके।

यह एक ऐसी दौड़ थी, जिसके लिए समय नहीं के बराबर था। कबाइलियों को पता नहीं था कि दिल्ली में क्या गुल खिला था और प्रतिरक्षा समिति को भी यह मालूम नहीं था कि उस समय तक कबाइली कश्मीर में कहां तक पहुंच गए थे। मेजर जनरल अकबर खां ने अपनी संशोधित गणना के अनुसार, कराची स्थित अपने शासकों को सूचित कर दिया था कि २६ अक्तूबर की शाम को श्रीनगर पर अधिकार निश्चित है। कबाइलियों और श्रीनगर के बीच में सिर्फ बारामूला नगर ही बच रहा था, जहां कोई विशेष समस्या खड़ी होने की संभावना नहीं के बराबर थी।

और सच भी यही था कि श्रीनगर का पतन २६ अक्तूबर की रात तक हो भी गया होता, यदि बारामूला में 'देवी' अपनी शक्तियों के साथ हसीना बेगम के रूप में अवतरित न हो गई होती।

२६ अक्तूबर की सुबह कबाइली जब बारामूला में घुसे तो उन्होंने हत्या, लूटमार और महिलाओं के साथ बलात्कार करने शुरू कर दिए। अपनी हैवानियत में वे मशगूल ही थे कि अचानक उन्हें एक घर के सामने ऐसा दृश्य देखने को मिला कि उनका सारा ध्यान उस ओर खिंच गया और लूटमार, हत्या आदि सभी कुछ बंद हो गया। कबाइलियों की संपूर्ण भीड़ उस घर के सामने आकर इकट्ठी हो गई। वे जो दृश्य देख रहे थे, वह बड़ा ही आकर्षक था। उनके सामने एक युवती थी, जिसके सौंदर्य में बला का जादू था। वह खूब सजीधजी थी और अपने घर के सामने सेहन में नाच रही थी। नृत्य करती हुई युवती के पैरों की थिरकन पर ताल देते हुए अचानक कोई मस्त होकर ताली बजाने लगा। शीघ्र ही संपूर्ण भीड़ उसी तरह ताली बजाने लगी। हर्ष ध्वनियां और सीटियां गूंजने लगीं। आधे घंटे तक वह युवती नृत्य करती रही। फिर चारों ओर झुककर सलाम करने के बाद वह घर के अंदर चली गई।

कबाइलियों ने जो कुछ देखा था, उस पर उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था। ऐसी हसीन लड़की उन्होंने पहले कभी देखी नहीं थी। वे शोर करने लगे कि युवती का नृत्य और होना चाहिए। कबाइलियों का नेता युवती से बात करने के लिए उसके घर के अंदर चला गया। वहां उसे पता चला कि उस युवती का नाम हसीना बेगम था और वह अपनी बूढ़ी मां के साथ रहती थी।

हसीना बेगम फिर से नृत्य करने के लिए तैयार हो गई पर उसने यह शर्त रखी कि कबाइली लोग अब और लूटमार तथा व्यभिचार नहीं करेंगे। कबाइलियों ने इस पर अपनी सहमति दे दी। अगली सुबह के लिए उन्होंने श्रीनगर जाना भी स्थगित कर दिया। वे सोचने लगे कि कुछ घंटों के विलंब से श्रीनगर फतह करने में कोई अंतर तो पड़ने वाला है नहीं।

रात्रिकालीन नृत्य के लिए तैयारियां शुरू हुईं। एक विशाल कैम्पफायर जलाया गया और बारामूला की औरतों से कहा गया कि वे कबाइलियों के लिए विशेष भोजन तैयार

करें। रात बीतने लगी। कबाइली भोजन और शराब का आनंद लेते हुए हसीना का नृत्य देखते हुए झूमने लगे। बीच-बीच में हसीना हर्ष ध्वनियों पर खुश भी होती रही। आधी रात को झुककर उसने सबको सलाम किया और अपने घर के भीतर चली गई। लोगों की मांग थी कि वह और नाचे लेकिन वह मुसकराकर वहां से निकल गई। अन्य औरतों में से किसी एक को बुलवाकर उसने गाना शुरू करवाया ही था कि अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट शुरू हो गई और नशे में चूर कबाइलियों पर भारतीय फौज को कब्जा करने में अधिक समय नहीं लगा।

निस्संदेह भारत के बहादुर जवानों तथा सैनिक अधिकारियों ने श्रीनगर और कश्मीर घाटी के विरुद्ध पाकिस्तानी षड्यंत्र को विफल कर दिया। २६ अक्तूबर, १९४७ की रात कबाइलियों को बारामूला में रोके रहने में हसीना बेगम ने जो भूमिका निभाई और भारतीय सेना को श्रीनगर पहुंचने का अवसर प्रदान कराया, उसके लिए वह सदा याद की जाएंगी और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि बारामूला निवासी अब भी हसीना बेगम को 'देवी' की तरह पूजते हैं। हसीना बेगम की कहानी उसके उन दो कारिंदों से, जिसे उन्होंने श्रीनगर सैनिक उच्चाधिकारियों के पास भेजा था और साथ ही उन कबाइलियों से ज्ञात हुई थी, जो बाद में युद्ध कार्रवाई के दौरान पकड़े गए थे।

हसीना बेगम पर बाद में क्या बीती, यह अज्ञात है। बाद में जब भारत की सेनाएं बारामूला में पहुँची तो उस समय हसीना बेगम का कहीं कोई नामोनिशान तक नहीं मिला। उसकी मां के भी विषय में कोई जानकारी नहीं मिली। जितने मुंह, उतनी बातें, हसीना बेगम के विषय में कई बातें कही जाती हैं किंतु सचाई के लिए सबूत की आवश्यकता होती है, जो किसी के भी पास नहीं है।

जब भी हिमालय की घाटी पर दुश्मनों ने अपने पांव रखने की कोशिश की है, हमारे जवानों ने अपनी जान की आहुति देकर उनके नापाक इरादों को कामयाब नहीं होने दिया। वह लद्दाख का युद्ध हो या फिर कारगिल का। किंतु ६३ वर्ष पूर्व कबाइलियों से श्रीनगर की रक्षा में एक रहस्यमयी युवती ने जो भूमिका निभाई, वह आज भी रहस्य के पर्दों से घिरी पड़ी है।

भयंकर बाढ़ से पीड़ित आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म०प्र०)

सहायता हेतु अपील

धर्म प्रेमी सज्जनो, गुरुकुल प्रेमी सज्जनो!

लगातार भारी वर्षा से नर्मदा नदी में रिकार्ड तोड़ भयंकर बाढ़ आई जिससे नर्मदा नदी के तट पर स्थित आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद के भवनों में चार फुट पानी भर गया जिससे गुरुकुल की कृषि नष्ट हो गई, गायों का भूसा सड़ गया, ईंधन की लकड़ी बह गयी, साग-सब्जी की फसल ख़राब हो गई, भवनों को क्षति पहुँची। पाँच लाख रुपयों की मूंग एवं पाँच लाख रुपयों की धान सड़-गल कर नष्ट हो गई। भूसा लकड़ी आदि में लगभग दो लाख रुपयों की हानि हुई। इस प्रकार गुरुकुल को जुलाई-अगस्त 2013 में लगातार वर्षा व भयंकर बाढ़ से बारह लाख रुपयों की हानि हुई। भगवान की कृपा से गुरुकुल जन हानि से बच गया। आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद मुख्य रूप से दान के सहारे से ही चल रहा है। प्रति-दिन एक सौ व्यक्तियों के भोजन का प्रबंध करना होता है जिसमें प्रति-दिन कम से कम चार हजार रूपये और मासिक एक लाख बीस हजार रुपयों का भोजन मात्र पर खर्च होता है। इस समय गुरुकुल के पास भोजन व्यवस्था के लिए भी राशि नहीं है। व्यापारियों से भोजन सामग्री दाल, चावल, तेल आदि उधार लाया जा रहा है, मंहगाई की मार तो झेलनी ही पड़ रही है अत: आप सभी दानी महानुभावों धर्मप्रेमी सज्जनों, आर्य जनों व सभा संस्थाओं से विनम्र प्रार्थना है कि आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म०प्र०) की तत्काल आर्थिक सहायता करने की कृपा करें। गुरुकुल सदैव आपका आभारी रहेगा।

गुरुकुल खाता- सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इण्डिया, **खाता नं०** - 1468328964, **IFCE CODE**- CBIN 0280757
(आर्ष गुरुकुल समिति के नाम भेजें)

अध्यक्ष : **स्वामी जगद्देव नैष्ठिक** मो0 9827513029
आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म० प्र०)- 461001

उत्तम गृहस्थ में ही जीवन की सफलता

❒**देवराज आर्य** सेवानिवृत मु० अध्यापक, रोहतक मार्ग, जीन्द हरियाणा

अपनी सन्तान को सुखी और समृद्ध बनाने के लिये माता–पिता कितना परिश्रम करते और कष्ट उठाते हैं उसकी गणना नहीं की जा सकती। माता–पिता द्वारा किये गये उपकार का बदला चुकाने हेतु उत्तम संतान का यह परम कर्त्तव्य बनता है कि अपने जीवित पितरों अर्थात् माता–पिता, दादा–दादी, तथा दूसरे सभी वृद्धों की तन, मन, धन से श्रद्धापूर्वक सेवा किया करें।

पुनरासद्य सदनमपश्च पृथिवीमग्ने।
शोषेमातुर्यथोपस्थेऽन्तरस्यां–शिवतमः ।। यजु १२/३९

पदार्थः– हे अग्ने– अर्थात् श्रेष्ठ गुणों से प्रकाशित जन। जिस कारण तू (अपः) जलों और (पृथिवीम्) भूमि तल के (सदनम्) स्थान को (पुनः) फिर २ (आसद्य) प्राप्त हो के (अस्याम्) इस माता के (अन्त) गर्भाशय में (शिवतमः) मंगलकारी हो के (यथा) जैसे बालक (मातु) माता की (उपस्थ) गोद में (शेषे) सोता है, वैसे ही माता की सेवा में–मंगलकारी हो।

भावार्थः– पुत्रों को चाहिये कि जैसे माता अपने पुत्रों को सुख देती है, वैसे ही अनुकूलता से अपनी माताओं को निरन्तर आनन्दित करें और माता–पिता के साथ विरोध कभी न करें और माता–पिता को भी चाहिये कि अपने पुत्रों को अधर्म और कुशिक्षा से दूर रखें।

वेद माता गृहस्थाश्रम को श्रेष्ठ और सुखी बनाने के लिए कितनी उत्तम शिक्षा दे रही है। मन्त्र में कहा गया है कि पुत्र–पुत्रियाँ वही भाग्यशाली होती हैं जो माता–पिता को वैसे ही सुखी करें जैसे सन्तान माता की गोद में सुख से सोता और शान्ति अनुभव करता है। अपनी सन्तान को सुखी और समृद्ध बनाने के लिये माता–पिता कितना परिश्रम करते और कष्ट उठाते हैं उसकी गणना नहीं की जा सकती। माता–पिता द्वारा किये गये उपकार का बदला चुकाने हेतु उत्तम संतान का यह परम कर्त्तव्य बनता है कि अपने जीवित पितरों अर्थात् माता–पिता, दादा–दादी, तथा दूसरे सभी वृद्धों की तन, मन, धन से श्रद्धापूर्वक सेवा किया करें। सदैव उनकी अच्छी धार्मिक बातों को मानकर उन पर चलने का पूर्ण प्रयत्न करें और उनका विरोध–कभी न करें।

महर्षि दयानन्द संस्कारों की व्याख्या करते हुए 'संस्कार विधि' में गृहाश्रम संस्कार की महत्ता बताते हुए लिखते हैं कि 'गृहाश्रम संस्कार' उसे कहते हैं कि जो ऐहिक और पारलौकिक सुख–प्राप्ति के लिये विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना और नियत काल में यथा विधि ईश्वर–उपासना एवं गृह–कृत्य करना और सत्यधर्म में ही अपना तन–मन–धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पति करना। गृहाश्रम केवल भोग का आश्रम नहीं है। यह तप और त्याग का आश्रम है। माता–पिता जहाँ अपनी सन्तान के नव–निर्माण हेतु तप और त्याग के मार्ग पर चलते हैं, वहीं दूसरे आश्रमवासियों के पालन पोषण का भार भी गृहस्थ ही वहन करते हैं। कितनी ही धार्मिक परोपकारिणी सभाएं, विद्यालय, कन्या पाठशाला, मठ–मन्दिर एवं चिकित्सालय आदि तथा गौशालाएँ गृहस्थों के कंधों पर ही चल कर परोपकार का उत्तम कार्य कर रही हैं। यही है सत्यधर्म में अपना पूर्ण योगदान करना।

मन्त्र में बताया गया है कि माता–पिता अपनी संतान को अधर्म और कुशिक्षा से दूर रखें। परन्तु आज युवाओं को धर्म और कर्त्तव्य पालन की शिक्षा देने का कोई प्रबन्ध नहीं रहा। बच्चे की शिक्षा के तीन केन्द्र विशेष रूप से होते हैं, दुर्भाग्य से ये तीनों ही केन्द्र आज विकृत हो गये हैं। जहाँ बच्चे का नव–निर्माण होकर उसे एक श्रेष्ठ मानव बनना था वे केन्द्र– घर, विद्यालय और समाज तीनों ही उसके बिगाड़ का कारण बनते जा रहे हैं। फिर आगे आने वाली पीढ़ियाँ कहाँ से धर्म और कर्त्तव्य पालन की शिक्षा ग्रहण करेंगी और कैसे बनेंगे वे उत्तम गृहस्थ और श्रेष्ठ धार्मिक नागरिक? हम कितना ही धन एकत्र करते चले जायें तथा अपने युवक, युवतियाँ कितनी ही डिग्रियाँ प्राप्त कर लें, याद रख लेना जब तक वैदिक धार्मिक शिक्षा के द्वारा सत्य आहार, सत्य विचार, सत्य व्यवहार, सत्य आचार तथा सत्य आधार के अनुसार चल कर जीवन का नव–निर्माण नहीं कर लेते तब तक घर, समाज, राष्ट्र एवं संसार सुखी नहीं हो सकता। इसलिये आज हम गृहस्थों की सबसे बड़ी

जिम्मेवारी है कि हम अपनी संतान को संस्कारित करके, समाज एवं राष्ट्र को समर्पित करें ताकि समाज एवं राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर हो सके।

आज के वातावरण से आए दु:ख, निराशा, भय एवं शिथिलता को दूर करें, वेद-मंत्र के अनुसार चल कर सुखी एवं निर्भयतापूर्वक जीवन व्यतीत करें तथा एक आदर्श गृहस्थ बनें।

अमाजुरश्चिद्भवथो युवं भगोऽनाशोश्चिदवितारापमस्य चित्।
अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य चिद्युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्यं चित्। ऋ० १०/३९/३

पदार्थ :- (युवम्) तुम दोनों पति-पत्नी (भवथ:) होओ, बनो (भग:) सौभाग्य। तुम दोनों सौभाग्य बन कर आओ। किसका सौभाग्य बनो? (अमाजुर:) वृद्धों का। परिवार में जो वृद्ध नर नारी हैं, उनका सौभाग्य बन जाओ। सेवा के द्वारा प्रतिदिन उनका आशीर्वाद प्राप्त करो और वे वृद्ध कहें कि हमारा तो भाग्य उदय हो गया है।

उनका सौभाग्य बनने के लिए क्या करें?

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन:।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।। मनु० २/१२

जो सदा नम्र, सुशील विद्वान् और वृद्धों की सेवा करता है- उसका आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये चार सदा बढ़ते हैं और जो ऐसा नहीं करता उनके आयु आदि चार नहीं बढ़ते।

मन्त्र में पहली बात आई कि गृहस्थाश्रम को सुखी और सम्पन्न बनाने के लिये तथा अपनी आयु की वृद्धि एवं उत्तम ज्ञान व यश प्राप्ति के लिये हम वैदिक विद्वानों एवं वृद्धों की सेवा को अपना कर्त्तव्य समझें क्योंकि जब हम उनके सान्निध्य में रहेंगे तो उनसे धर्म अर्थात् सदाचार, शुद्धि, ईश्वरोपासना, योग सिद्धि, उत्तम आचार व्यवहार की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त होगी जिससे आयु, बल में वृद्धि होकर यश मिलेगा। वर्तमान में जो आचरण का पतन हो रहा है उसका मुख्य कारण सन्तान का वृद्धों के प्रति अनादर भाव एवं शिक्षा का न मानना है। आज की संतान बड़ों के प्रति उदासीन एवं लापरवाह हैं। तभी तो मानव समाज और राष्ट्र का अपमान सार्वजनिक रूप में हो रहा है। आज के आचार व्यवहार को मानवोचित नहीं कहा जा सकता।

वेदमाता गृहस्थों के उद्धार के लिए दूसरा धर्म बताती है- ''अनाशो: चित्-अवितार: भवथ:''। ओ गृहस्थो- भूखों के तारने वाले बनो अर्थात् स्वयं भोजन करने से पहले घर परिवार के लोगों को भोजन कराके फिर स्वयं भोजन करो। ऐसा न हो कि वे भूखे रह जायें और हम मौज-मस्ती करते रहें। ऐसा करने वाले गृहस्थ पाप के भागी बनते हैं। किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है-

खाने से पहले जरा तुम, हक पराया सोच लो।
कितने भूखों की हैं इसमें रोटियाँ यह देख लो।
दूसरों के गम में अपनी, गमगिनियां देखा करो,
सबके गुण अपनी हमेशा गलतियां देखा करो।।

भूख सबको लगती है इसलिये भूखों और प्यासों के लिए भी हमारा कुछ योगदान होना चाहिये। महर्षि दयानन्द इस विषय में लिखते हैं कि आपात् स्थिति में अन्न और जल तो पापी को भी दे देना चाहिये।

तीसरी बात आई- 'अपमस्य चित् अवितार: भवथ:' अरे उत्तम गृहस्थियो! आप सब पापियों को संसार सागर से पार उतारने वाले बनो। यदि अपने आस-पास कोई ऐसा मार्ग भूला हुआ व्यक्ति पाप मार्ग पर चलने लग गया हो, कोई अभागा युवक कुसंग की राह पर चल कर घर-परिवार को बर्बाद करने लगा हो तो ऐसे व्यक्तियों को धर्म-मार्ग पर चला कर अपने कर्त्तव्य का बोध कराना अच्छे गृहस्थी का परम-धर्म है। यदि एक कुमार्ग गामी को वेद मार्ग का पथिक बना दिया तो समझो हम परमात्मा की आज्ञा का पालन कर रहे हैं, यही ईश भक्ति है।

आगे वेद माता कहती है-'अधस्य चित् अवितार: भवथ:' जो आंख के अंधे नहीं, अपितु आंखें होते हुए अज्ञान के कारण अंधे होकर जीवन के मार्ग से भटक रहे हैं, उन्हें वेद-ज्ञान से आलोकित कर जीवन के सर्च्च मार्ग पर चलने की सच्ची राह दिखायें। आज संसार में अज्ञानान्धकार छाया हुआ है। लोग आंखें होते हुए भी गढ़े में गिर रहे हैं। आचरण के अभाव में युवक-युवतियां घर से भाग रहे हैं, आत्महत्याएं कर रहे हैं। उन्हें अपने कर्त्तव्य का बोध कराओ, सत्याचरण का मूल्य बताओ।

पांचवीं शिक्षा आई- ''कृशस्य चित् अवितार: भवथ''

हम सब वैदिक गृहस्थ- दुर्बलों के रक्षक बनें अर्थात् किसी की धन से, दुर्बल- शरीर वालों की उत्साह बढ़ाकर, मानसिक दुर्बलों की मनोबल बढ़ाकर तथा आत्महीन लोगों की ईश्वरोपासना की रीति से आत्मिक शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न करके-- सभी प्रकार दुर्बलों के सहायक बनें।

अन्त में आया-'युवाम् इद आहुर् भिषजा रुतस्त चित्' अर्थात हमारा गृहस्थ धर्म इतना पवित्र और सात्विक हो कि प्रत्येक व्यक्ति हमें औषध रूप समझे। जैसे बीमार व्यक्ति को औषध में ही जीवन दिखाई देता है, वैसे ही हम वृद्धों, भूखों, पापियों, अज्ञानियों, निर्बलों और अनाथों के सहायक बनें। परमात्मा हमें इतनी शक्ति प्रदान करे कि आज की युवा शक्ति को धर्म, सत्य, सदाचार का पाठ पढ़ाने में हम समर्थ हो सकें।

पण्डित चमूपति जी की अूमल्य कृति
'संध्या-रहस्य' का धारावाह प्रकाशन

अघमर्षण मंत्राः

पापों से बचे रहने के लिये

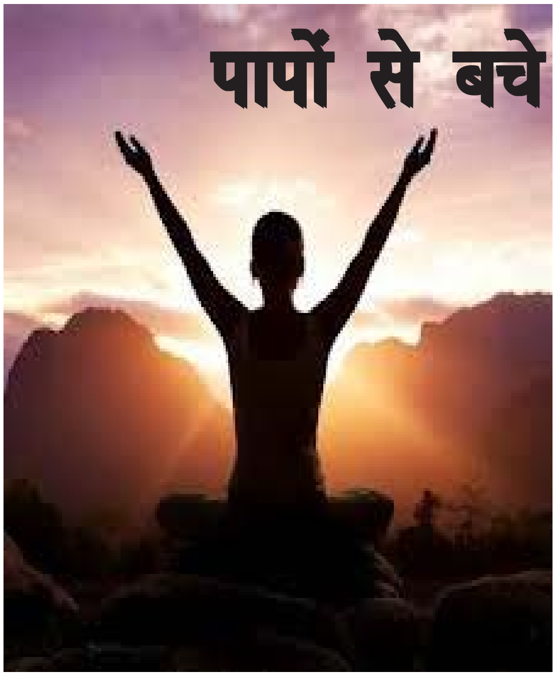

ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।
ओं समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।
ओं सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

ऋ० म० १० सू० १९०

अन्वयः -ऋतं च सत्यं च अभि-इद्धात् तपसः ओ३म् (परमात्मनः) अधिजायत। ततः रात्रि अजायत। ततः अर्णवः समुद्रः (अजायत)।

अर्णवात् समुद्रात् संवत्सरः अधि अजायत। ओम् वशी विश्वस्य मिषतः अहोरात्राणि विदधत्।

ओम् धाता सूर्य्याचन्द्रमसौ दिवं च पृथिवीं च अन्तरिक्षं अथ उ स्वः यथापूर्वं अकल्पयत्।

(ऋतम्) ज्ञान अर्थात् वेद (च) और (सत्यम्) प्रकृति (अभि) सब ओर से (इद्धात्) प्रकाशमान (तपसः ओं) धर्म्म-स्वरूप, ज्ञानवान् परमात्मा से (अधि अजायत) उत्पन्न हुई (ततः) उसी ज्ञान स्वरूप से (रात्रि) प्रलय (अजायत) हुई (ततः) उसी से (अर्णवः) बड़ा (समुद्रः) समुद्र अर्थात् आकाश हुआ।।१

(अर्णवात्) बड़े (समुद्रात्) समुद्र से अर्थात् आकाश के होने पर (संवत्सरः) काल (अधि, अजायत) हुआ। (अहोरात्राणि) दिन-रात (विश्वस्य) सारे जगत् के (वशी ओं) वश में रखने वाले ओं ने (मिषतः) स्वभावतः (विदधत्) बनाए (सूर्य्याचन्द्रमसौ) सूर्य्य और चन्द्रमा (धाता ओं) उत्पादक परमात्मा ने (यथापूर्वम्) पहिले की भांति (अकल्पयत्) बनाए (दिवस्) प्रकाशमान लोकों को रचा और (पृथिवीम्) पृथिवी (च) और (अन्तरिक्षम्) रिक्त स्थान अर्थात् आकाश स्पेश को (अथ) और (स्वः) सुखधाम या चमकते मण्डल भी रचे।

इन तीन मंत्रों में अनादि पदार्थों का वर्णन आया है। पहिले ''ऋत'' ज्ञान को और ''सत्य'' प्रकृति को लिया है। ज्ञान प्रकृति का गुण नहीं, अतः ''ऋत'' शब्द से जीव की ओर संकेत समझना चाहिए। साथ-साथ निमित्त कारण परमात्मा को भी बता दिया है।

संसार में सार क्या है? यह अति गूढ़ प्रश्न है। प्रकृतिवादी केवल प्रकृति का अस्तित्व मानते हैं। प्रकृति के नाना रूप प्रतिक्षण हमारी आंखों के सामने आते रहते हैं। कहीं सूर्य्य की तीखी चितवन कहीं आकाश का नीला आंचल, कहीं तारों की सुहावनी द्युति और कहीं चन्द्र की सुन्दर ज्योति। दूर क्यों जाओ, हमारे रहने के भवन और हमारी अपनी देह यह सब उस छबीली नटी प्रकृति ही के अद्भुत नाट्य हैं। इस बहुरूपी की कहीं स्थिति नहीं। जो पदार्थ जैसा आज है, वैसा कल न होगा। एक दिन बीज, दूसरे दिन अंकुर फिर विशाल वृक्ष। कौन कहे यह वस्तु वास्तव में एक है? ज्योतिषी कहते हैं कि सूर्य्य प्रतिदिन पतला हो रहा है; इस के परमाणु इससे अलग होते जाते हैं और प्रकाश मन्द पड़ता जाता है। यही अवस्था अन्य मण्डलों और लोकों की भी है। जिस गति से संसार के पदार्थ क्षण-क्षण में क्षीण होते हैं उससे अनुमान किया जाता है कि एक दिन ये इतने सूक्ष्म हो जाएंगे कि अदृश्य होंगे। वह रूप

सब पदार्थों का सम होगा। जैसे मिट्टी से बने बर्तन आज भिन्न-भिन्न दीखते हैं, परन्तु कुम्हार जानता है कि एक समय सब मिट्टी थे, इसी प्रकार बहुरूपी प्रकृति भी प्रलय-काल में एक रूपी हो जाती है। उसी अवस्था को इन मंत्रों में 'रात्रि' कहा है। क्योंकि उस समय प्रकाश नहीं होता और चीजों का वैविध्य न होने से कुछ भी पहिचाना नहीं जाता। प्रकृति की इस अवस्था को ''कारण दशा'' कहते हैं।

जब परमाणुओं के संयोग से सृष्टि होती है तो यह प्रकृति 'कार्य' हो जाती है। आज कल 'कार्य' है। जड़ प्रकृति स्वयं कोई कार्य नहीं कर सकती। वैज्ञानिक एक दूसरा पदार्थ 'फोर्स' अर्थात् 'शक्ति' मानते हैं। हम पूछते हैं, शक्ति चेतन है या जड़? जड़ हो तो उसके कार्य नियमित न होंगे। अन्धेर नगरी के राजा की भान्ति न समय देखा जाएगा न अधिकार। कोई अवस्था, कोई क्रम कोई पद्धति न होगी। परन्तु वास्तव में संसार में अन्धेर नहीं। ब्रह्माण्ड का अणु-अणु अपनी नियन्त्री शक्ति को बुद्धिमती बताता है। उस शक्ति के लिए यहाँ शब्द ''अभिद्धात्'' आया है, अर्थात् सर्वथा चेतन और ''तपसः'' ज्ञान-स्वरूप। वही संसार का निमित्त कारण है। वही प्रकृति की विकृति करता और फिर उसे समावस्था में ले जाता है*।

प्रकृति कब से है? परमात्मा कब से है? जीव कब से है? ये शकाएं विचार-शीलों को सदैव होती आई हैं।

वेद इन तीनों पदार्थों को अनादि मानता है। विज्ञान तथा अनुभव भी इसी सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं। यदि अब कोई चीज नूतन नहीं होती तो पहिले क्योंकर नूतनता की कल्पना करें? सृष्टि का प्रवाह कब से चला? यह परमात्मा को कैसे सूझी कि ''सम रूपा'' को ''असमरूपा'' करे, इसी का उत्तर ''यथापूर्वम्'' और 'मिषतः' शब्दों में दिया है। आधुनिक सृष्टि परमात्मा का पहिला परीक्षण नहीं, जो सफल हुआ। किन्तु ऐसे ही अनादि काल से अनेक चक्र होते आए हैं। जैसे परमात्मा अनादि उसी प्रकार उसका स्वभाव स्रष्टत्व भी अनादि। जब वह स्रष्टा अथवा प्रलयकर्ता न था, तब वह परमात्मा न था। अतः यह प्रलय और सृष्टि की शृंखला पहिले से ही चली आई तथा आगे भी चली जाएगी। यह वह सूत्र है जो न आरम्भ हुआ न समाप्त होगा। अन्य जितने पदार्थ इन मंत्रों में कहे हैं वे प्रकृति के कार्य हैं उनके साथ और भी सारे ब्रह्माण्ड को सम्मिलित करो।

कई टीकाकार इन मंत्रों में हेर फेर कर सृष्टि का क्रम बताते हैं कि अमुक पदार्थ पहिले हुआ, अमुक पीछे। हमारे विचार में यह कल्पना अशुद्ध है। अर्णव समुद्र अर्थात् आकाश और संवत्सर अर्थात् काल (स्पेस एंड टाइम) सबसे पूर्व ठीक हैं, क्योंकि इन ही में संसार विचरता है। आगे सर्वत्र क्रम नहीं बनता। इन मंत्रों में परमात्मा को सृष्टिकर्ता तथा (वशी) नियन्ता बताकर सृष्टि की सामग्री (प्रकृति), और जीव के अनादित्व पर बल दिया है और प्रलय तथा सृष्टि के प्रवाह का अपूर्व वर्णन किया है।

अघमर्षण क्या?

इन मंत्रों का नाम अघमर्षण मंत्र है। अघ का अर्थ है पाप, और मर्षण दूर करना, अर्थात् पाप को दूर करना। स्वामी जी का मत है कि जब-जब पाप मन में आए इन मंत्रों का ध्यान करो, पाप हट जाएगा। इसमें हेतु क्या? पाप का मूल केवल अपने स्वरूप तथा स्थिति का अज्ञान है। कोई तो अपने आप को परमात्मा का बड़ा भाई समझता है और अन्य प्राणियों पर अत्याचार करना उस ज्येष्ट-भ्रातृत्व का स्वाभाविक फल जानता है।

वह अपनी वास्तविक स्थिति से ऊंचा उड़ा। यह उक्त अज्ञान का एक रूप है, जिसे अभिमान कहते हैं। एक और महाशय अपना इतना भी अस्तित्व नहीं जानता, जितना जड़ प्रकृति का। वह रींगता है और गिड़गिड़ाता है। आत्म-विश्वास उसमें नहीं, काम करने का उत्साह उससे दूर है। यह उक्त अज्ञान का दूसरा रूप है, जिसका लौकिक नाम 'भय' है। बस संसार में पाप जितना होता है, इन्हीं दो कुत्सित कारणों से होता है। जिसने इन दो का नाश किया, वह पापों से छूटा। रोग का नाश मूल के नाश से होता है। भला! जिसने इन मंत्रों में वर्णित ईश्वरीय महिमा का चिन्तन एक वार भी कर लिया, वह अभिमान क्या खाक करेगा? जहां दरिया है वहां बिन्दु क्या? लाखों करोड़ों जीव जिस आत्मा के आगे हाथ बांधे हैं उस पर एक जीव का दबाव हो? असम्भव है!

रहा भय, उसका भी इसी चिन्तन से मूलोच्छेदन होगा। क्योंकि जो परमात्मा हाथी का रक्षक है वही च्यूंटी का भी रक्षक है। अत्याचारियों तथा बलवानों के शिर पर उस शासक का दण्ड और दबाव है। तनिक आगे विचारो तो कर्म और फल के परामर्श से आवागमन का सिद्धान्त अवगत होगा और वही आधार है पवित्राचरण का।

सन्ध्या में अघमर्षण इसलिए आया कि इस पर रोज ध्यान दिया जाय और पापों को दूर ही दूर रखा जाय।

* न समता से विषमता स्वयं हो सकती है न विषमता से समता। नियन्ता के न होने में न प्रलय का नियम होगा न सृष्टि का।

स्वास्थ्य-रक्षा की बीस आवश्यक बातें

❑**स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती,** आर्ष गुरुकुल कालवा, जिला जींद

१ ब्राह्म मुहूर्त में उठने से शरीर में स्फूर्ति, कान्ति और तेज की वृद्धि होती है।
२ रात्रि को ताम्रपात्र में रखा बासी जल यदि प्रातः नाक द्वारा पीया जाये तो नेत्रों की ज्योति स्थिर होगी।
३ शौच जाते समय मुंह न खोलिये अन्यथा दुर्गन्ध के कीटाणु मुख मार्ग से श्वास नलिका द्वारा शरीर में प्रविष्ट होकर रोग उत्पन्न करेंगे।
४ मुख की सफाई प्रातः सायं खूब अच्छी तरह करनी चाहिए। तीनों तरफ से दांत, जीभ, तालु, जीभ के नीचे का भाग, गला अच्छी तरह साफ करना चाहिये। वृक्ष की दातुन सर्वश्रेष्ठ उपाय है। कोई बढ़िया मंजन भी अच्छा है। सरसों का तेल दांतों पर मलते रहना उपयोगी है। ब्रुश से दांतों को हानि होती है। भोजन के बाद दांतो की सफाई कीजिये। इससे दांत बुढ़ापे तक बने रहेंगे।
५ मुंह में पानी भरकर आंखों पर ठण्डे पानी के छपके दिन में तीन बार देने से आंखों के रोग नहीं रहते।
६ यथासंभव ठण्डे जल से ही स्नान कीजिये। स्नान करते समय पहले सिर भिगोना चाहिये पांव नहीं, इससे शरीर में स्फूर्ति और कार्यक्षमता बढती है, रक्त का शरीर में भली प्रकार अभिसरण होता है।
७ भोजन के समय जल न पीयें तो अच्छा है। आधे घण्टे बाद पीना स्वास्थ्यप्रद है। यदि बिना पीये न रहा जाये तो केवल एक ही बार मध्य में पीयें, वह भी कम मात्रा में।
८ दूध के साथ नमकीन पदार्थ, मूली के साथ दूध, खरबूजा के बाद दूध सेवन न करें। ये विष बनकर शरीर को नष्ट कर सकते हैं।
९ भोजन करने के बाद थोडा विश्राम अवश्य करना चाहिए। कुछ देर बायीं करवट लेटना उचित है। सो जाना हानिकारक होगा।
१० भोजन के तुरन्त बाद पढ़ना लिखना या श्रम करना रोग उत्पन्न करता है। आधा घण्टे के बाद ही काम में लगना चाहिये।
११ दिन छिपते समय पढने-लिखने से आंखों की ज्योति निर्मूल हो जाती है। इसी प्रकार चलती हुई तेज सवारियों में पढ़ना भी बुरा है।
१२ मादक द्रव्य मनुष्य के शत्रु हैं। शराब, गांजा, चरस, भांग, अफीम, चाय, काफी आदि पदार्थ स्वास्थ्य के शत्रु हैं। रोगों को उत्पन्न करके आयुष्य का नाश करते हैं।
१३ गैस की शिकायत वालों को भोजन के पूर्व लवणयुक्त अद्रक या नींबू का रस लेकर भोजन आरम्भ करना चाहिए।
१४ खडे होकर पानी न पीयें। इससे पेट और पांवों की अनेक बीमारियां होती हैं। आडे-टेढ़े बैठकर भी जल पान हानिकारक है। सीधे स्वस्थ बैठकर पानी पीना चाहिए।
१५ जब प्यास लगे तब जल पीओ और भूख लगे तब भोजन करो। भूख में पानी और प्यास में भोजन स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है।
१६ शरीर के वेगों को रोकने से अनेक रोगों की उत्पत्ति होती है। इसलिए भूख, प्यास, शौच, पेशाब, पाद, छींक, जम्हाई, अंगडाई आदि वेगों को रोकना ठीक नहीं है।
१७ शुद्ध दूध अत्यन्त बलप्रद होता है। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए दूध का सेवन परमावश्यक है। दूध अति शुद्ध होना जरूरी है। **दूध में अशुद्ध अंगुली डालने से वह विष बन जाता है।**
१८ दीर्घायु और स्वास्थ्य की कामना करने वाले लोगों को (यथा रक्तचाप आदि की शिकायत वाले व्यक्तियों को) प्रातः काल सूर्योदय के समय गांव से दूर जंगल में टहलने जाना चाहिये। उदित सूर्य की जीवनदायिनी किरणों के प्रकाश में बैठकर जीवनीशक्ति प्राप्त करनी चाहिए।
१९ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्ति और उम्र के अनुसार नित्य उपयोगी व्यायाम करना चाहिये। नवम्बर से मार्च तक अधिक और उसके बाद कम मात्रा में व्यायाम उपयोगी है। ग्रीष्म तथा वर्षा में व्यायाम बहुत ही हल्का करना चाहिये। व्यायाम से शरीर हृष्ट-पुष्ट, दृढ़, सहनशील और रोगों से जूझने की क्षमतायुक्त हो जाता है। स्मरण रहे शक्ति से अधिक व्यायाम रोगोत्पादक और घातक बन जाता है।
२० रात्रिजागरण रोगोत्पादक तथा आयुनाशक है। अतः समय पर सोकर समय पर उठ जाना चाहिए।

जानते हो!

–रवीश आर्य

❍एक पेंसिल से पचास हजार शब्द लिखे जा सकते हैं।
❍वर्तमान अफगानिस्तान का महाभारत काल में गांधार नाम था।
❍महाराजा रणजीतसिंह के वीर सेनापति हरिसिंह नलवा ने राज्य की सीमाएँ अफगानिस्तान तक फैला दी थीं।
❍ईरान का नादिरशाह भारत से कोहिनूर हीरा लूटकर ले गया था।
❍चित्तौड़ के राजा हमीर ने मुहम्मद तुगलक को हराकर तीन माह कैद में रखा था।
❍हमारे जीवन का लगभग एक तिहाई हिस्सा सोते हुए बीतता है।
❍पेड़ पौधे पशुओं और मनुष्य के लिए जीवनदायी हैं। पर पेड़ पौधों के लिए पशु और मनुष्य भी जीवनदायी हैं। वे उन्हें खाद और कार्बनडाई आक्साइड देते हैं।

हास्यम्

–आस्था गुड्डू

अनु और हरसी को रास्ते में दो बम मिले।
अनु– चल पुलिस को देकर आते हैं।
हरसी– अगर कोई बम रास्ते में फट गया तो––
अनु– कह देंगे – एक रास्ते में फट गया।
☺☺😐
डॉक्टर– तुम छत से क्यों लटक रहे हो?
मनोरोगी (पागल)– मैं एक बल्ब हूँ।
डॉक्टर– तो जल क्यों नहीं रहे हो?
मनोरोगी– अभी लाइट गई हुई है ना––।
☺☺😐
पुलिस इन्स्पैक्टर के घर चोर घुस गया।
पत्नी– उठो जी घर में चोर घुस आया है।
इन्स्पैक्टर– चुप करो और सो जाओ, मैं इस वक्त ड्यूटी पर नहीं हूँ।
☺☺😐
एक घर में चोर घुस गया। पति पत्नी ने मिलकर चोर को पकड़ लिया। पत्नी जी कुछ ज्यादा ही मोटी थी। वे चोर के ऊपर बैठ गई और पति जी से बोली– जाओ जी, आप जल्दी से पुलिस को बुला लाओ। मैं इसको हिलने नहीं दूंगी। पति इधर उधर देखने लगा। पत्नी ने कहा– देख क्या रहे हो? जल्दी जाओ। पति बोला– मेरी चप्पल नहीं मिल रही है। तभी चोर कराहते हुए बोला– जल्दी कर भाई, चप्पल मेरी पहन जा।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिकाः

❖दो हाथों का यह शैतान
बैठे नाक पर पकड़े कान।।
❖साथ साथ मैं जाती हूँ, हाथ नहीं मैं आती हूँ।।
❖हरा आटा, लाल परांठा,
सखियों ने मिल कर बांटा।
❖छोटे से मियां जी, छाढ़ी सौ गज की।।
❖कई कपड़ों के पार हुई। एक नहीं सौ बार हुई।
❖गोल गोल है मेरी काया।
हर नारी का रूप बढ़ाया।
कांच है मेरे अंग अंग में।
मैं मिलती हर एक रंग में।
❖देखी एक अनोखी रानी
एक टांग पर खड़ी हुई।
एक हाथ से छड़ी घुमाई
गेंद बना दी पड़ी हुई।

ऐनक, परछाई, मेंहदी, सुई–धागा, सुई, चूड़ी, परकार

विचार कणिकाः

प्रतिभा बहन

☯वह तेरे पास है, तू उसे बाहर ढूंढता है, इसी भूल ने तुझे भुलाया है।
☯जिनको परमात्मा का ज्ञान है वे सदा दूसरों का भला करने में तत्पर रहते हैं।
☯दूसरों को उपदेश देने से पहले उसको अपने जीवन में लागू करो।
☯कहने की अपेक्षा करके दिखाना उत्तम होता है।
☯जो मनुष्य अपने वचन का पालन नहीं करता उसका विश्वास जाता रहता है।
☯मित्र की परीक्षा विपत्ति के समय में ही होती है।
☯अच्छे संग से मनुष्य अच्छा; बुरे संग से बुरा हो जाता है।
☯वास्तव में मनुष्य वहीं है जिसका मन पवित्र है और भावना शुद्ध है।
☯गुरु का मान करने से ही विद्या प्राप्त होती है।

❏सत्यसुधा शास्त्री

चित्तौड़ की महारानी

चित्तौड़ के महाराणा लक्ष्मणसिंह के ज्येष्ठ कुमार अरिसिंह जी शिकार के लिए निकले थे। वे अपने साथियों के साथ एक जंगली सुअर के पीछे घोड़ा दौड़ाए चले जा रहे थे। सुअर इन लोगों के भय से एक बाजरे के खेत में घुस गया। उस खेत की रक्षा एक बालिका कर रही थी। वह मचान से उतरी और खेत के बाहर आकर घोड़ों के सामने खड़ी हो गई। बड़ी नम्रता से उसने कहा-' राजकुमार! आप लोग खेत में घोड़ों को ले जाएँगे तो मेरी खेती नष्ट हो जाएगी। आप यहीं रुकें, मैं सुअर को मारकर ला देती हूँ।'

राजकुमार को लगा कि यह लड़की भला सुअर को कैसे मारेगी। वे कौतूहलवश खड़े हो गए। पर उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस लड़की ने बाजरे के एक पेड़ को उखाड़कर तेज किया और खेत में निर्भय घुस गई। थोड़ी ही देर में उसने सुअर को मारकर राजकुमार के सामने लाकर रख दिया। राजकुमार उसकी निर्भयता और वीरता को देखकर दंग रह गए। वे चुपचाप अपने पड़ाव पर आए। वहाँ जब वे लोग स्नान कर रहे थे तो एक घोड़े के पैर में एक पत्थर आकर लगा, जिससे घोड़े का एक पैर टूट गया। यह पत्थर उसी किसान की लड़की ने अपने मचान पर से पक्षियों को उड़ाने के लिए फैंका था। राजकुमार के घोड़े की दशा देख वह अपने खेत से दौड़कर वहाँ आई,और असावधानी के लिए क्षमा याचना करने लगी।

राजकुमार ने कहा- 'तुम्हारी शक्ति देखकर मैं आश्चर्य में पड़ गया हूँ। मुझे दुःख है कि तुम्हें देने योग्य कोई पुरस्कार इस समय मेरे पास नहीं है।'

लड़की ने कहा- 'अपनी गरीब प्रजा पर आप कृपा रखें, यही मेरे लिए बड़ा पुरस्कार है।' और अपने स्थान पर वापस चली गई।

सायंकाल राजकुमार और उनके साथी घोड़ों पर बैठे जा रहे थे। उन्होंने देखा कि वही लड़की सिर पर पानी का घड़ा रखे दोनों हाथों से दो बैलों की रस्सियाँ पकड़े जा रही थी। राजकुमार के एक साथी ने विनोद के लिए धक्का देकर मटका गिरा देना चाहा। पर जैसे ही उसने घोड़ा बढ़ाया, उस लड़की ने उसका इरादा समझ लिया। उसने अपने हाथ में पकड़ी रस्सी को इस प्रकार फैंका कि उस रस्सी में उस सवार के घोड़े का पैर उलझ गया, तथा वह सवार भी धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ा।

इस निर्भय बालिका के साहस और शक्ति को देखकर राजकुमार अरिसिंह मुग्ध हो गए। स्वयं अरिसिंह ने उसके पिता के पास जाकर उनसे विवाह करने का निवेदन किया। इस प्रकार अपने पराक्रम के प्रभाव से यह बालिका एक दिन चित्तौड़ की महारानी हुई। राणा हम्मीर ने उसी वीर माता के गर्भ से जन्म लिया था। सच है साहस और आत्मविश्वास के बल पर मनुष्य बड़ी से बड़ी मंजिल पा सकता है।

आज का काम!

धर्मराज युधिष्ठिर के पास कोई ब्राह्मण सहायता मांगने आया। महाराज उस समय किसी कार्य में अत्यंत व्यस्त थे। उन्होंने नम्रतापूर्वक ब्राह्मण को कह दिया- महाराज! आप कल दर्शन दें, आप जो चाहेंगे, दे दिया जाएगा। ब्राह्मण तो चला गया, किन्तु भीमसेन ने उठकर राजद्वार पर रखी दुंदुभि को बजाना शुरु कर दिया। उन्होंने सेवकों को भी मंगलवाद्य बजाने की आज्ञा दे दी। धर्मराज ने असमय मंगलवाद्य बजते देखकर पूछा- क्या कारण है? वाद्य बजाने की आज्ञा किसने दी है? सेवकों ने बताया कि भीमसेन ने यह आज्ञा दी है। भीम बुलाए गए। कारण पूछने पर वे बोले- महाराज ने काल को जीत लिया इससे बड़ा मंगल का समय और क्या हो सकता है? 'मैंने काल को जीत लिया?' युधिष्ठिर चकित हुए। भीम ने स्पष्ट किया- महाराज विश्व मानता है कि धर्मराज युधिष्ठिर के मुंह से हंसी में भी झूठी बात नहीं निकलती। आपने याचक ब्राह्मण को अभीष्ट दान कल देने को कहा है। इसलिए कम से कम कल तक तो अवश्य ही काल पर आपका अधिकार हो गया होगा!

अब धर्मराज को अपनी भूल का ज्ञान हुआ। वे बोले भाई भीमसेन! आज तुमने मुझे अच्छा सावधान किया। पुण्य कार्य तत्काल करना चाहिए। उसे कल के लिए टालना भारी भूल है। उन ब्राह्मण देवता को अभी बुलाओ, जिससे उसे अभीष्ट दान अभी दे सकूँ। न जाने कल क्या होगा! और ब्राह्मण को यथेष्ट दान देकर सत्कारपूर्वक विदा कर दिया गया।

शिक्षा : आज का कार्य कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

शक्तिशाली बनो

स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज ब्रह्मचर्य के द्वारा शारीरिक बल को बढ़ाने पर अत्यंत जोर देते थे। एक किस्सा वे प्राय: सुनाया करते थे।

रात के समय एक सरदार जी अपनी पत्नी के साथ ट्रेन से एक छोटे स्टेशन पर पहुँचे। रात के समय संयोग से उन्हें एक तांगे वाला मिल गया। जब निश्चित स्थान पर जाने को तांगे वाले से कहा तो वह बोला कि उस रास्ते पर तो रात के समय ठग होते हैं। सरदार जी गर्ज कर बोले- आने दो देख लेवांगे। शाना नूँ।

रास्ते में तांगे वाला सरदार जी से बोला- जी मेरे पास तो सिवाय तांगे के कुछ नहीं हैं, आप अपने सामान की रक्षा स्वयं करना।

सरदार जी ने हाँ भर दी।

कुछ दूर चलने पर उनका सामना सात ठगों के एक गिरोह से हो गया।

सरदार जी बोले-चार को तो मैं ही देख लूँगा।

सरदारनी बोली-दो को मैं निपटा दूँगी।

अब तांगे वाला सोचने लगा कि मैं कोई हिजड़ा हूँ जो एक को भी नहीं संभाल सकता।

जोश में आकर उसने अपना चाबुक घुमाया और उन तीनों को देखकर ठग पीछे हट गए और रास्ता छोड़ दिया। ठगों के बीच से वे सकुशल आसानी से निकल गए।

जहाँ शारीरिक और आत्मिक शक्ति होती है वहाँ किसी भी प्रकार का भय नहीं होता। नारी जाति भी अगर बलशाली हो तो बलात्कार, छेड़खानी, अश्लील टिप्पणियाँ सुनाने वालों के होश भली प्रकार से ठिकाने लगाये जा सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानंद को सफलता कैसे मिली

संसार का भला करने वाले केवल वे मनुष्य नहीं हैं जो केवल विद्वान हैं और न वे मनुष्य हैं जो बड़े बड़े शब्द रटकर लम्बे लम्बे व्याख्यान दे सकते हैं क्योंकि वे मनुष्य जो कुछ कहते हैं उसको मन से अनुभव नहीं करते। उन ही मनुष्यों के जीवन से जगत का कल्याण हुआ है और हो सकता है जो सदाचारी हैं, नेक हैं और जिनका मन पवित्र है।

प्रेरक प्रसंग

❒डॉ० विवेक आर्य

स्वामी श्रद्धानंद ने जो अपने जीवन में सफलता प्राप्त की उसका कारण उनकी विद्या न थी, उनका वकील होना न था और न ही उनकी मीठी वाणी थी, बल्कि विशेष कारण उनका आचारवान होना था। वे जो कुछ कहते थे उस पर आचरण भी करते थे। उनकी आत्मा शुद्ध थी, इसलिए उनके कथन का प्रभाव पड़ता था। जो कोई भी मनुष्य उनका सत्संग करते थे वे अत्यंत प्रभावित होते थे। स्वामी जी अपने कर्तव्य को अनुभव करते हुए ईश्वरीय नियमों और सच्चाई का निडरता से प्रचार करते थे। वे अपने असल अमूल से कभी नहीं डगमगाए। उनका वैदिक धर्म प्रचार इस कारण से प्रभावित करता था कि वे दृढ़ता से अपने जीवन में उसका पालन करते थे। उनका ईश्वर के प्रति विश्वास दृढ़ था। घोर निराशा में भी उन्होंने बलवती आशा का संचार किया था और कितने ही भटकते हुओं को सन्मार्ग पर लगाया था।

(सन्दर्भ- स्वामीजी के सहयोगी लब्भूराम नैय्यड़ कृत धर्मोपदेश की भूमिका)

आचरण तो अच्छा हो

एक दार्शनिक अपने पास एक दर्पण रखता था और बार-बार उसमें अपना चेहरा देखता था। उसके एक मित्र ने कहा, भैया! तुम हो तो बड़े ही ज्ञानी, किंतु बार-बार दर्पण देखने वाली तुम्हारी आदत अच्छी नहीं लगती। कौन सा तुम्हारा चेहरा बड़ा सुंदर है कि उसे इतना निहारते हो?

दार्शनिक ने बड़ा मर्मस्पर्शी जवाब दिया, कहा- मित्र! मैं जानता हूँ कि चेहरा सुंदर नहीं है। दर्पण इसलिए नहीं देखता कि चेहरा पहले से सुंदर बना या नहीं, दर्पण इसलिए देखता हूँ कि याद रहे कि चेहरा अच्छा नहीं है, तो कम से कम आचरण तो अच्छा हो। कुछ ऐसा करूँ कि मेरा चेहरा गौण हो जाए और आचरण मुख्य बन जाए।

भजनावली

लेखक :
कविवर श्री जोरावरसिंह जी आर्य,
बरसाना मथुरा वाले

प्रस्तुति :
अरुणमुनि वानप्रस्थ
ग्राम/पत्रालय- बोड़िया कमालपुर,
जिला रेवाड़ी-१२३४०१

हम तेरा कैसे करें गुणगान, ऋषिवर दयानन्द।। टेक।।

भारत गाफिल हो सोता था, खाता आलस में गोता था।
निशिदिन नष्टभ्रष्ट होता था, अपना बल वैभव खोता था।
तूने ही डाली जान।।१।। ऋषिवर दयानन्द।।

अनाथ विधवा दु:ख पाते थे, हम ही उनको ठुकराते थे।
विधर्मी उन्हें अपनाते थे, यूं हिन्दू घटते जाते थे।।
तुझको ही आया ध्यान।।२।। ऋषिवर दयानन्द।।

भारत बाग पड़ा था खाली, तू ही बनकर आया माली।।
की सब पेड़ों की रखवाली, लाया उपवन में हरियाली।।
कर दिया जीवन बलिदान।।३।। ऋषिवर दयानन्द।।

गर ऋषि भारत में नहीं आता, तो भारत जग से मिट जाता।
यहाँ हिन्दू एक नहीं पाता, मैं ही भजन कहाँ यह गाता।।
खोता कहीं ईमान।।४।। ऋषिवर दयानन्द।।

चौदह नला तमंचा छोड़ा, मुख सब विरोधियों का मोड़ा।
गढ़ पाखण्ड दम्भ का तोड़ा, सिर अज्ञान असुर का फोड़ा।।
स्वयं किया विषपान।।५।। ऋषिवर दयानन्द।।

एक साथ सब मिलकर आओ, ओ३म् ध्वज के नीचे आओ।
महर्षि जी के गुण गाओ, ऋषि के जीवन का फल पाओ।।
पाए सिंह कवि यह ज्ञान।।६।। ऋषिवर दयानन्द।।

धर्म-शिक्षकों की आवश्यकता

बीकानेर (राजस्थान) के प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय (आर० एस० वी०) और उससे सम्बन्धित अन्य कुछ विद्यालयों में वैदिक धर्म, मानवीय जीवन-मूल्य, राष्ट्रभक्ति, नैतिक शिक्षा, संस्कृत योग, आसन-प्राणायाम, व्यायाम, सुरक्षा उपाय आदि को सिखाने-पढ़ाने हेतु ५ अध्यापक (स्त्री-पुरूष) की आवश्यकता है।

शैक्षणिक योग्यता- स्नातक/स्नातकोत्तर शास्त्री/आचार्य या समकक्ष। आर्यसमाज के गुरुकुल में पढ़े हुए, आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों-सिद्धान्तों को जानने-मानने-श्रद्धा रखने वाले। बी० एड०/शिक्षा शास्त्री/ एम० एड० को वरीयता। साथ में विशेष योग्यता - आर्यवीर दल शिक्षक, योग-प्राकृतिक चिकित्सा की कोई उपाधि प्राप्त को वरीयता। पती-पत्नी दोनों शिक्षक हों तो भी वरीयता।

वय- २५ से ४० वर्ष तक। (यदि स्वास्थ्य अच्छा है तो अन्तिम आयु सीमा में छूट सम्भव)

वेतन- दस से बीस हजार (योग्यतानुसार) प्रतिमाह।

चयन से पूर्व लगभग २ माह का प्रशिक्षण (१३ अक्टूबर से ७ दिसम्बर २०१३) प्राप्त करना अनिवार्य है। प्रशिक्षण हेतु अधिकतम दस व्यक्तियों का चयन होगा। प्रशिक्षण में सफल व्यक्तियों से ५ का चयन बीकानेर में सेवा हेतु किया जाना है। शेष सफल व्यक्तियों के लिए भी अन्यत्र सेवा प्राप्ति की सम्भावना है। प्रशिक्षण देहरादून, अजमेर, रोजड़ व बीकानेर में दिया जायेगा। प्रशिक्षण व प्रशिक्षण काल में निवास-भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। घर व शिविर स्थल के बीच आवागमन-मार्ग व्यय प्रशिक्षणार्थी को स्वयं वहन करना है।

आवेदन की अन्तिम तिथि - ३० सितम्बर २०१३

सम्पर्क - प्राचार्य, राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर।

ई-मेल rsvjnv@gmail.com दूरभाष - ०९८२९२०७५४६, ०९८२९२१८८१८

इच्छुक व्यक्ति सादा कागज पर अपने समस्त सम्बन्धित विवरणों को लिखकर, अपने चित्र व प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपि सहित ई-मेल से भेज देवें।

श्रीमती सरोज देवी का देहान्त

सांघी, श्री अजीत नम्बरदार (सु० श्री बलवन्त सिंह) की धर्मपत्नी श्रीमती सरोज देवी का गत १२ अगस्त को दु:खद निधन हो गया। आपकी अवस्था लगभग ४४ वर्ष की थी। आप आर्यसमाज सहित सभी धार्मिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लेती थी। परोपकार के कार्यों में आपकी बहुत रूचि थी। शांतिधर्मी परिवार इस दु:खद घटना पर परिवार जनों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है, और परमपिता परमात्मा से परिजनों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है। (भलेराम आर्य द्वारा)

ओढ़व में सिद्धान्त शिविर

संजय प्रजापति

पूज्य स्वामी विवेकानन्दजी परिव्राजक, दर्शन योग महाविद्यालय के पावन सान्निध्य में आर्यसमाज अहमदाबाद द्वारा कर्मफल सिद्धांत शिविर का आयोजन गत रविवार मंगल पाण्डे ओडिटोरियम विराट नगर रोड़, ओढ़व, अहमदाबाद में किया गया। जिसमें अहमदाबाद तथा आस पास से लगभग 900 धर्मप्रेमी प्रबुद्ध व्यक्तियों ने भाग लिया। ईश प्रार्थना के पश्चात् अतिथि विशेष शमशेरसिंह जी डी आई जी, अहमदाबाद, शिशपाल जी, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट-गुजरात प्रभारी का स्वागत किया गया। उसके बाद स्वामीजी का कर्म फल सिद्धांत के बारे में प्रेरक व्याख्यान हुआ। स्वामीजी ने श्रोताओं द्वारा की गई व्यावहारिक शंकाओं- जैसे कि ईश्वर का सच्चा स्वरुप, वैदिक ध्यान, उपासना पद्धति, गृहस्थ के कर्तव्य, वैदिक धर्म की व्याख्या, नागरिकों के सामाजिक नियम आदि का यथा योग्य वेद के आधार पर सरल शैली में समाधान किया। दिनेशभाई पंचाल, दिव्यकांत पारीख ने भावपूर्ण प्रतिभाव दिया। सभी ने प्रीतिपूर्वक भोजन का आस्वाद लिया।

हिसार में 'खुले में रचना' काव्य संगोष्ठी

-प्रवीण कमार स्नेही

१७ अगस्त, शनिवार को हिसार के चौधरी छाजुराम बी एड कॉलेज के सभागार में 'खुले में रचना' काव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'खुल में रचना' कार्यक्रम का यह ९वां आयोजन था। संगोष्ठी में वरिष्ठ साहित्यकार कुमार रविन्द्र, गजलकार ज्ञानप्रकाश विवेक, दिल्ली से कवयित्री सविता सिंह, सुमन और विपिन चौधरी ने कविता पाठ किया। 'खुले में रचना' संगोष्ठी के आयोजक सईद अयूब ने बताया कि इस संगोष्ठी का यह ९वां आयोजन हिसार में किया जा रहा है। इससे पूर्व इस संगोष्ठी को दिल्ली, जयपुर, लखनऊ जैसे नगरों में किया जाता रहा है।

संगोष्ठी में स्थानीय कवियों ने भी कविता पाठ किया जिनमें कवि मिहिर रंजन पात्र, मनोज छाबड़ा, प्रदीप नील, मनोज मुद्‌गल, प्रवीण कुमार स्नेही आदि सम्मिलित थे। कविता पाठ के पश्चात् साहित्य में हो रहे बदलावों पर चर्चा की गई। हिन्दी भाषा में हो रहे परिवर्तनों पर चिन्ता जताते हुए वरिष्ठ साहित्यकार व नवगीतकार कुमार रविन्द्र ने कहा कि यदि हमें हिन्दी को यथारूप रखना है तो शुरूआत अकेले से ही करनी होगी, जो धीरे-धीरे कारवां बन जाएगी। उन्होंने अपने नवगीत में कहा, 'शुभ दिन होगा, जब हर घर में कविता होगी'।

प्राणीमात्र के लिए ही अमृत तत्त्वों की उत्पत्ति : यश

(ईश्वर दयाल माथुर)

जयपुर, सीनियर सिटीजन फोरम मानसरोवर द्वारा प्रतिमास अन्तिम तिथि को डे केयर सेंटर में किये जाने वाले यज्ञ के ब्रह्मा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष श्री यशापाल यश बने। अपने उद्‌बोधन में श्री यश ने कहा कि मन वचन कर्म द्वारा किसी का अधिकार हनन न करना, स्वतंत्रता का हनन न करना और संताप न पहुंचाना ही अहिंसा है और मुक्ति का सोपान है। उपस्थित समुदाय ने यज्ञाग्नि के समक्ष प्रण किया कि वे प्रतिमाओं पर अमृत तत्त्व, दूध व जल न बहाकर इनके मानवीय उपयोग पर बल देंगे। अध्यक्ष के० एम० रामनानी के उपस्थितों का आभार प्रकट किया।

ओ३म्

दयानन्द मठ दीनानगर जिला गुरदासपुर पंजाब

हीरक जयन्ती समारोह

१८-१९-२० अक्तूबर २०१३

को बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जाएगा।

जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

स्वामी सदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष दयानन्द मठ एवं समस्त परामर्श समिति

०१८७५-२२०११० ०९४७८२-५६२७२,९४१७२-२०११०

आर्य साहित्य पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (पंजी०) द्वारा स्मृति शेष चौ० गुगनराम सिहाग, उनकी छोटी बहन स्मृति शेष गीना देवी व स्मृति शेष श्रीमती रज्जी देवी नन्दाराम सिहाग की पावन स्मृति में तीन साहित्य पुरस्कार प्रत्येक वर्ष दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य आर्यसमाज में अनुसंधान, लेखन, प्रकाशन व सम्पादन परम्परा और महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के सिद्धान्तों को प्रगति देना, आर्यसमाज में सुन्दर, संग्रहणीय, मौलिक हिन्दी, संस्कृत इत्यादि भाषा में अधिक से अधिक गद्य व पद्य साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहायक वैदिक साहित्य, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, शोध प्रबंध, भजन संग्रह, काव्य, आयुर्वेद इत्यादि के लेखकों, प्रकाशकों व सम्पादन को प्रोत्साहन करना है। भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य के तीन साहित्यकारों के लिए तीनों पुरस्कार अलग-२ रूप से आरक्षित हैं। स्वर्गीय लेखक/साहित्यकार की प्रकाशित कृति को उनके पुत्र, पुत्री, पति, पत्नी व उत्तराधिकारी भी भेज सकते हैं।

इन पुरस्कारों के लिए जनवरी २००६ से दिसम्बर २०१३ तक के मध्य प्रकाशित हुई पुस्तकों की एक-एक प्रति, लेखक के दो चित्र, परिचय के साथ अपनी-२ प्रविष्ठियाँ व्यक्तिगत रूप से, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा ३१ जनवरी २०१४ तक सोसायटी के कार्यालय में भेजे जा सकते हैं। इसके लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। पुरस्कारों की कोई सीमा निश्चित नहीं है। **कार्यालय पता : सचिव, नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट, गुगनराम सोसायटी भवन, २०२ पुराना हाउसिंग बोर्ड भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा)**

सोसायटी/निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम व मान्य होगा। एक लेखक/सम्पादक कितनी भी रचनायें भेज सकता है। एक लेखक/सम्पादक को उसकी एक से अधिक पुस्तकों पर भी पुरस्कार दिया जा सकता है। पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें लौटायी नहीं जायेगी। प्रत्येक पुरस्कार में प्रशस्ति-पत्र व नगद राशि भेंट की जाएगी।

सचिव, नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट,

चलभाष : 09466532152, 09255115175

ईश्वर को -- पृष्ठ १७ का शेष

क्या-२ नहीं है? फिर यह घूमती भी है! वह भी इतनी व्यवस्था से कि हमें घूमना अनुभव भी नहीं होता। क्या यह व्यवस्था धरती के सारे मनुष्य मिल कर सकते हैं? कितना हास्यास्पद लगता है ना! परन्तु ईश्वर मात्र हमारी धरती को ही नहीं अपितु अनगिनत ब्रह्माण्डों को धारण करता है और उन्हें घुमाता भी है, उनका संचालन भी करता है। एक पल को भी यदि वह इस कार्य को न करे तो हमारा क्या हाल होगा, हम कल्पना भी नहीं कर सकते। अपने घर के संचालन हेतु हम क्या-२ कार्य नहीं करते? दिन रात इसमें लगे रहते हैं, फिर गांव का संचालन, फिर नगर का, प्रान्त का, देश और विश्व की व्यवस्था के संचालनार्थ कितनी समितियाँ, सभाएँ, संस्थायें कार्य कर रही हैं, विचार कर देखो। जब साधारण से साधारण कार्य को दक्षतापूर्वक संचालन की आवश्यकता है तो फिर सृष्टि का कार्य बिना संचालक के चल सकेगा? ईश्वर के न मानने वाले तनिक विचारें।

सृष्टि का प्रलय : उत्पत्ति के लिये, संचालन के लिये तो ईश्वर की आवश्यकता समझ में आती है परन्तु प्रलय? प्रलय क्या होना चाहिए? बनाना तो समझ में आ गया परन्तु बिगाड़ना भी आवश्यक है क्या? हां ! उतना ही आवश्यक है जितना कि बनाना। आपने बहुत सुन्दर, सुदृढ़ एवं सुखमय साधनों वाला भवन बनाया। आप उसमें रहे, फिर आपके बच्चे रहे। परन्तु समय के साथ-२ वह भी खण्डित होता चला गया। जब आपके पौत्र एवं प्रपौत्र उसमें रहने लगे तो उन्होंने क्या देखा कि दीवारों में जगह-२ दरारें पड़ चुकी थीं, छत भी जर्जर हो गई थी, फर्श भी उखड़ने लगे थे, अब उसमें रहना सुरक्षित नहीं रहा। वे तुरंत उसे छोड़ कर अन्यत्र जा बसते हैं और उसका नये सिरे से निर्माण करते हैं। निर्माण करने के लिए उस भवन का गिराना, उसको तोड़ना, उसका विनाश करना आवश्यक है। जब आयु पूरी हो गई तो फिर प्रलय या विनाश अत्यन्त आवश्यक है। विज्ञान के अनुसार matter can not be created nor destroyed अर्थात् कोई तत्त्व न तो बनाया जा सकता और न ही उसका विनाश किया जा सकता है। जब यह सृष्टि भी अपनी आयु पूरी करने के उपरान्त उपयोग के योग्य नहीं रहती तो फिर इसका प्रलय भी ईश्वर अपने सामर्थ्य से करता है। यदि ईश्वर को न मानेंगें तो यह दोष भी आ जायेगा कि सृष्टि का प्रलय न होगा।

इसके अतिरिक्त अन्य भी कई बिन्दु हो सकते हैं परन्तु वे लगभग सभी उक्त बिन्दुओं के अन्तर्गत आ जाते हैं। अब मात्र यह प्रश्न बचता है कि यदि हम ईश्वर को न मानें तो वह हमारा क्या बिगाड़ लेगा। यह प्रश्न सम्भवतः हम इसलिए उठाते हैं कि समाज में या राज्य व्यवस्था में जब हम किसी विधि विधान को नहीं मानते या कार्यक्षेत्र में अपने अधिकारी की नहीं मानते तो प्रत्यक्ष रूप में हमें दण्ड भुगतना पड़ता है। वह इसलिए है कि हम उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति का, उनकी व्यवस्था का एक साधन हैं। परन्तु ईश्वर के विषय में ऐसा नहीं है। हम ईश्वर की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर रहे हैं। उसे हमारी आवश्यकता नहीं है, हमें उसकी आवश्यकता है। यदि हम ईश्वर को न मानेंगे तो जिन गुणों की उपलब्धि उससे हमें होनी है, वह न होगी और हमारा समाज, हमारा जीवन बिगड़ जायेगा। राज्य व्यवस्था में इसके विपरीत है। राज्य अपनी सब आवश्यकताओं के लिए हम पर निर्भर है, जहां भी उसकी आवश्यकता में, नियम में बाधा पहुंचेगी वह दण्ड देगा। हम न तो ईश्वर की आवश्यकता में बांधा पहुंचा सकते हैं और न ही उसका नियम भंग कर सकते हैं अतः वह कभी भी कुपित होता ही नहीं है। वह मात्र हमारे कर्मों का साक्षी है और जैसा कर्म वैसा प्रदाता है। अतः बिगाड़ने का कोई प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। यह उल्टी व्यवस्था होने के कारण यदि हमें सुख चाहिये, शांति चाहिये, आपसी प्रेम, सौहार्द का वातावरण चाहिये, आत्मिक उत्थान चाहिये तो हमें उसे मानना ही पड़ेगा। एक बात और कि कोई ईश्वर को नहीं मानता तो सुखी है या ईश्वर को मानता है और दुःखी है। यह ईश्वर को मानने या न मानने के कारण नहीं है। कभी किसी ने अच्छे कर्म किये तो उनका फल भोग रहा है और किसी ने बुरे कर्म किये तो उनका भी फल भोग रहा है। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ईश्वर का सच्चा भक्त ईश्वरीय व्यवस्था को जानकर कभी दुःख में भी धैर्य नहीं छोड़ता न उसका शोक मनाता है अपितु हंसते-२ सब कुछ सहन कर लेता है और दूसरी ओर नास्तिक जो भौतिक सुख साधनों से सम्पन्न होने पर भी तनिक सी आपत्ति में भी धैर्य खोकर महान् कष्ट उठाता है और आत्महत्या का घृणित कार्य भी कर डालता है। भौतिक साधनों की उपलब्धि/अभाव किसी के सुखी एवं दुःखी होने का प्रमाण नहीं है।

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-८-२०१३ को प्रकाशित।

बच्चों को-- पृष्ठ १४ का शेष

यौन शिक्षा बच्चों को दिग्भ्रमित करती है–

अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे विकसित देशों में विद्यालयों में यौन शिक्षा प्रदान करने से युवा पीढ़ी तन और मन से रोगी बनती जा रही है साथ ही उनका नैतिक तथा चारित्रिक पतन भी हुआ है। इस दुःखदायी स्थिति से उबरने का योग तथा आध्यात्मिक शिक्षा ही एकमात्र समाधान है। हमारा मानना है कि यौन शिक्षा बच्चों को दिग्भ्रमित एवं पथभ्रष्ट करती है। यौन शिक्षा अनैतिक सम्बन्धों को बढ़ावा देती है। यौन शिक्षा आत्मनियंत्रण की शिक्षा नहीं होती। यौन शिक्षा केवल यह बताती है कि यौन क्रिया करते हुए मां को गर्भवती होने से कैसे बचाया जा सकता है। इस तरह स्कूलों में यौन शिक्षा अनिवार्य बनाए जाने की तैयारी करना केवल अनैतिक आचरण को बढ़ावा देने वाला ही साबित हो सकता है। इस विषम सामाजिक स्थिति से अपने बच्चों को बचाने के लिए हमें स्कूलों में 'यौन शिक्षा की जगह पर योग एवं आध्यात्मिक शिक्षा' अनिवार्य रूप से देने की अविलम्ब आवश्यकता है।

आध्यात्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए–

हमारा यह सामाजिक उत्तरदायित्व है कि हम अभिभावकों के सहयोग से बच्चों को भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की संतुलित शिक्षा देकर उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करें क्योंकि ऐसे बालक आगे चलकर स्वस्थ व सभ्य समाज की आधारशिला रखेंगे। इसलिए मेरी गोवा सरकार के साथ ही भारत के अन्य प्रान्तों की सरकारों के साथ ही भारत सरकार से भी अनुरोध है कि वे जगत् गुरु कहे जाने वाले इस देश की संस्कृति एवं सभ्यता को ध्यान में रखते हुए अपने विद्यालयों में बच्चों को अनिवार्य रूप से यौन शिक्षा की जगह योग एवं आध्यात्म की शिक्षा दें। हमारा मानना है कि

विद्यालय ऐसा हो, जिसमें हो चरित्र निर्माण।
बच्चों के कोमल मन को दे, मानवता का ज्ञान।
तब होगा उत्थान जगत का, तब होगा उत्थान।
आध्यात्मिक चेतना जगायें सबको सही दिशा दिखलायें।
बच्चे बने प्रकाश जगत का मन में ज्ञान की ज्योति जलायें,
क्योंकि – विद्यालय से बढ़कर जग में कोई ना तीरथ धाम।

वास्तव में बच्चों को केवल योग एवं आध्यात्म की शिक्षा देने से ही संयम, शुचिता, स्व–अनुशासन, नैतिकता, चारित्रिकता तथा आध्यात्मिकता के गुण विकसित होंगे अन्यथा मानव सभ्यता को विनाश के कगार पर जाने से रोका नहीं जा सकेगा।

ओ३म्
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के
४७ वें स्थापना दिवस पर

ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं
निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

२१ सितम्बर से २ अक्तूबर २०१३ तक
पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं
आश्रम स्थापना दिवस समारोह
२ अक्तूबर २०१३
अधिक से अधिक संख्या में इष्ट मित्रों सहित
पधारकर धर्म लाभ उठावें।
निवेदकः
विक्रमदेव शास्त्री व्यवस्थापक, वानप्रस्थ ईशमुनि, संयोजक
९८९६५७८०६२ ९८१२६४०९८९
सत्यानन्द आर्य, प्रधान ट्रस्ट
दर्शनकुमार अग्निहोत्री मंत्री ट्रस्ट
आत्मशुद्धि आश्रम,
बहादुरगढ़, जिला झज्जर–१२४५०७

ओ३म्
M- 98968 12152

रवि स्वर्णकार
हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।
प्रो० रविन्द्र कुमार आर्य
आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)–१२६१०२

अन्ततः

धार्मिक अनुष्ठान करने पर भी सुखी क्यों नहीं?

❒सुमन कुमार वैदिक आर्य कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद

आज धर्म के नाम पर यज्ञ, अनुष्ठान, कथायें, भजन, कीर्तन, अखण्ड पाठ, भागवत, सांईसंध्या, शनिपूजा, आरतियां व्रत इत्यादि जाने क्या-क्या किया जा रहा है? वेद उपनिषद् जैसे आर्ष ग्रन्थों को त्यागकर गुरुओं, बाबाओं का आश्रय ले रहें है जो सस्ती भक्ति का नया मार्ग दे रहें है। नवरात्रों में देवी पूजा, सावन में काँवर लाने की परम्परा बन चुकी है। मन्दिरों, तीर्थो, तान्त्रिकों, ज्योतिषियों, मजारों के प्रति श्रद्धा और आस्था में वृद्धि उनकी निरन्तर बढ़ती संख्या दर्शाती है। इतनी श्रद्धा से भक्ति आदि करने वाले दु:खी क्यों हैं? उनकी समस्यायें समाप्त होने का नाम नहीं ले रहीं, राष्ट्र में सुख शांति क्यों नहीं आ रही?

एक तो इन सब धार्मिक कर्मकाण्डों में अपने को धार्मिक दिखाने की इच्छा है, किन्तु मन वचन कर्म से वास्तव में हम धार्मिक नहीं है। ये सारे अनुष्ठान, पूजा जहाँ व्यक्तिगत लाभ के लिए किये जाते हैं, वहीं यह भी सत्य है कि ईश्वर मन्दिरों, मजारों में नहीं मिलता। न ही वह घण्टे घड़ियालों की ध्वनि सुनकर प्रसन्न होता है। ईश्वर की मूर्तियाँ देख सुन बोल नहीं सकतीं। उनमें न तो ईश्वर को देखा जा सकता है और न ही उसके कार्य मनुष्यों के कार्यों जैसे होते हैं। बिना ज्ञान के भक्ति अन्धी होती है। अतः बिना ज्ञान के गुरुओं और बाबाओं से चमत्कार की आशा से समाज को सुख शान्ति कभी प्राप्त नहीं हो सकती। आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में व्यक्ति की सोच, विचार व्यापक नहीं बन रहे हैं, जिससे नैतिक और सामाजिक पतन हो रहा है। जहाँ विज्ञान ने दूरियाँ कम की है, वहीं हृदयों की दूरियाँ बहुत बढ़ गयी हैं।

गुरु यम, नियम, आहार, व्यवहार को शुद्ध किये बिना समाधि और मुक्ति के मार्ग दिखा रहा है। साधक संसार में कोई-कोई होता है, उनमें भी आत्मा परमात्मा का ज्ञान रखने वाला कोई विरला होता है। वेदों की परम्परा को छोड़ कर सुख, आनन्द की कल्पना भी असम्भव है और वैदिक पद्धति में यम, नियम का पालन साधक के लिए आवश्यक है। महान योगी वही होता है जो बाह्य (प्रकृति) और आन्तरिक हृदय का मिलान कर लेता है। वही ईश्वर का साक्षात्कार करता है। उसकी प्रवृत्तियों में अन्तर्द्वन्द्व नहीं रहता, वह सदैव आनन्दित रहता है। प्राचीनकाल में आध्यात्मवाद का प्रचार था तो लोगों के चरित्र बहुत ऊँचे थे और भोजन बहुत शुद्ध था। महाराजा अश्वपति पूरे विश्वास से घोषणा करते थे।

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः। नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

मेरे देश में कोई भी चोर नहीं, कोई कंजूस नहीं, दान न देने वाला नहीं, शराबी नहीं, प्रतिदिन यज्ञ न करने वाला नहीं, कोई मूर्ख अनपढ़ या अविद्वान भी नहीं। जब कोई पुरुष व्यभिचारी नहीं, तब व्यभिचारिणी स्त्री कैसे हो सकती है! आज कोई ऐसी घोषणा करने का साहस कर सकता है? सारे रोगों की, सब दु:खों की एक चिकित्सा है- आध्यात्मवाद! यदि आहार शुद्ध नहीं होगा, तो व्यवहार भी शुद्ध नहीं होगा और अशुद्ध व्यवहार से दु:ख बना रहेगा।

एक अन्य मार्ग है सुखी होने का, यदि मानव जगत् से उदासीन हो जाये और मन और प्राण आत्मा के सेवक बन जायें, तब भी साधन आनन्दित होने लगता है, हृदय में उसकी प्रतिष्ठा होने लगती है। यह संसार एक कल्प वृक्ष जैसा है यहाँ जैसी कल्पना करोगे, वैसे ही बन जाओगे।

आज प्रजा में अशांति आने का मुख्य कारण है- राजा में स्वार्थवाद का आना। प्रजा राजा का अनुसरण करती है। धार्मिक पुरुषों में धन एकत्र करने की प्रवृत्ति, दिखाने की कुछ और अन्दर कुछ और, तो उनकी तथा प्रजा दोनों की धार्मिकता को नष्ट कर अशांति होती है। जब साधक अपना स्वार्थ पहले और अन्य को बाद में रखता है तो राष्ट्र में धार्मिकता होते हुए भी शांति नहीं रहती। संग्रह करने की व्यापारियों में प्रवृत्ति हो जाती है, तो जिनके अधिकार को छीनकर अपने पास संग्रह करते हैं, उस प्रजा के मन-मस्तिष्क में अशांति आ जाती है। आग्नेय अस्त्र धारण करने वाला भी द्रव्यपति बनने से धनपति को यथार्थ वाक्य प्रकट नहीं करता, स्वयं उसकी आत्मिक शक्ति नष्ट हो रही है, तो वह प्रजा को क्या सुख देगा। धार्मिक महापुरुषों की न्यूनता होने से राष्ट्र में अशांति आती है, चरित्र का अभाव हो जाता है। फिर चाहे कितनी पूजा-पाठ कर्मकाण्ड करें शान्ति, आनन्द नहीं मिल सकता । आनन्द तो त्याग से मिलता है। यज्ञ का अर्थ होता है- दूसरे के लाभ के लिए किया जाने वाला कर्म। पूजा उपासना का अर्थ है उसके गुणों को ग्रहण करना। अतः इसे अपनाने से ही समाज सुखी होगा।

गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम बणी पूण्डरी कैथल में आर्य मानव निर्माण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें राज्य भर से १५० नवयुवकों ने भाग लिया। समापन के अवसर पर गुरु ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के उत्तराधिकारी शिष्य स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्र सेवा के लिए स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी गौतम नगर आर्यसमाज दादरी को गुरु ब्रह्मानन्द सम्मान से सम्मानित किया। सम्मान में स्वामी जी को पगड़ी, शॉल व इक्यावन हजार रूपये प्रदान किये गए।

जिला वेदप्रचार मण्डल जींद द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की पूर्व संध्या पर झांझ गेट पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता प्रमुख समाजसेवी श्री श्रीचन्द जी जैन ने की व जींद के अतिरिक्त उपयायुक्त श्री जयवीर सिंह आर्य मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। गुरुकुल कालवा के आचार्य राजेन्द्र जी व स्वामी सोमानन्द जी की गरिमामय उपस्थिति में मुख्य वक्ता प्रो० ओमकुमार आर्य (उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) व भजनोपदेशक संदीप आर्य ने श्रीकृष्ण के वास्तविक जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संयोजन सहदेव समर्पित ने किया।

महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम में मासिक सत्संग स्वामी रामवेश जी की अध्यक्षता में मनाया गया। मंचस्थ स्वामी जी व मुख्य वक्ता सहदेव समर्पित। सुनील शास्त्री जी के भजनोपदेश हुए। उपस्थित गणमान्य श्रोतागण।

ओ३म्

मानव सेवा प्रतिष्ठान (दिल्ली)

60-बी, हुमायूंपुर, नई दिल्ली-29 फोन 011-20910097

अभिनन्दन, छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार समारोह

कार्यक्रम

दिनांक	:	06 अक्तूबर 2013 को प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक
स्थान	:	119, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली- 220049
अध्यक्षता	:	श्री स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती (आचार्य गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली)
उद्घाटन	:	श्री डॉ० योगानन्द शास्त्री, विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली
विशिष्ट अतिथि	:	श्री रामस्वरूप आर्य प्रधान, नॉर्दर्न अमेरिकन जाट चैरेटि (अमेरिका), श्री केशव तिवारी, अमस्तरडैम हॉलैण्ड।

अभिनन्दन

स्वामी रामवेश जी (जीन्द, हरियाणा) को स्व० श्रीमती मुख्तारी देवी बेरी झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान।

श्री ओमप्रकाशजी वर्मा (यमुना नगर) को स्वर्गीय श्री डॉ० आनन्दकुमार बिरजा देनहॉग हॉलैण्ड स्मृति सम्मान।

पण्डित कमल नारायण जी (रायपुर छ०ग०) को स्व० श्री मास्टर रतन सिंह जी, माजरा डबास दिल्ली स्मृति सम्मान।

श्रीमती संतोषबाला आर्या (गन्नौर सोनीपत) को श्रीमती लक्ष्मी देवी नोलथा पानीपत हरियाणा स्मृति सम्मान।

स्वामी जीवानन्दजी नैष्ठिक (रिवाड़ी) को स्व० श्री रामपत आर्य इसमाइला स्मृति सम्मान।

आचार्य निशा आर्या (कन्या गुरुकुल, हसनपुर) को स्व० श्रीमती इतवारिया रामदास तिवारी हालैण्ड स्मृति सम्मान।

सविता विद्यालंकार (कन्या गुरुकुल सासनी) को स्व० श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़ (राज०) स्मृति सम्मान।

आचार्य रवीन्द्र नागर जी (प्राचार्य भारतीय विद्याभवन, दिल्ली) को स्व० आचार्य श्रीराम शास्त्री ज्ञानपीठ सम्मान।

ब्र० अंजली आर्या (उपाचार्या कन्या गुरुकुल पचगाँवा) को स्व० श्रीमती भानुमती पूरन कल्पू, हॉलैण्ड स्मृति सम्मान।

आचार्य जयकुमार (गुरुकुल मंझावली फरीदाबाद) को स्व० श्री पं० ऋषि बलदेव तिवारी जी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान।

वक्तागण -

स्वामी आर्यवेश जी (मन्त्री, वैदिक विरक्त मण्डल), डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी (एम० डी० यू०, रोहतक), डॉ० धर्मेन्द्र कुमार (सचिव-दिल्ली संस्कृत अकादमी), प्रवीण कुमार आर्य (चेयरमैन फोसाइट, दिल्ली) श्री जसवीर सिंह मलिक (सम्पादक जाटरत्न), पं० देवानन्द भगेलु (हालैण्ड), श्री कैलाश गहलौत (एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट), श्री विद्यामित्र ठुकराल जी (दिल्ली), ओमप्रकाश यजुर्वेदी (प्रधान स्नातकमण्डल, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली), श्री मनोज मिश्रा (प्रिंसिपल रा० आ० व० मा० वि०, सरॉयख्वाजा, फरीदाबाद), श्री रवीन्द्र जी डबास (पूठखूर्द, दिल्ली), शैलेश गुप्ता (द्वारका), श्री विनय आर्य (महामंत्री दि० आ० प्र० सभा), चौधरी जसवन्त सिंह देशवाल (झज्जर), श्री रणवीर शास्त्री (बवाना), चतरसिंह नागर (दिल्ली)।

निवेदक

सोमदेव शास्त्री	राजवीर सिंह शास्त्री	मास्टर कर्णसिंह	हरवीर शास्त्री
प्रधान	महामंत्री	वरिष्ठ उपप्रधान	उपप्रधान
	चन्द्रदेव शास्त्री	रामपाल शास्त्री	
	मन्त्री	कार्यकर्त्ता प्रधान	